SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

नव विहान

2025

प्रधाननिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

नवीन प्रशासनिक भवन, चौथी मंजिल

दा.नौ.मार्ग, मध्य रेलवे

छ.शि.म.ट., मुंबई 400 001

प्रधाननिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
मध्य रेल, छ. शि. म. ट., मुंबई

हिंदी वार्षिक पत्रिका

नव विहान

सप्तम अंक

वर्ष 2025

प्रधान संरक्षक

श्रीमति अदिति शर्मा, प्रधान निदेशक

संरक्षक

श्रीमति नीना मोरे, उपनिदेशक

संपादक

श्री के पी बालाचंद्रन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पत्रिका समिति

श्री दीपक, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमति मीनु देवन, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

डिज़ाइनकर्ता

श्री के. पी. बैजु, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अस्वीकरण: इस पत्रिका में रचनाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं | संपादक मंडल का उनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है | रचना/आलेखों के सम्पादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार संपादक मंडल में निहित होंगे |

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकारों के नाम	पृष्ठ संख्या
1	हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का सन्देश		5
2	शुभकामना संदेश	श्रीमती अदिति शर्मा	7
3	संदेश	श्रीमती नीना मोरे	8
4	संपादकीय	श्री के पी बालाचंद्रन	9
5	बच्चे बड़े हो जाते हैं	श्री राकेश कुमार	10
6	घर के ही वास्ते	श्री दिलीप कुमार मिश्रा	11
7	कठिन समय	श्री दिनेश वसंत नगराले	12
8	भारत में सरकारी कार्यालयों की संस्कृति:एक विश्लेषण	श्रीमती अर्पिता गुप्ता	13
9	केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत : कथकली से तेय्यम तक	श्रीमती मीनु देवन	15
10	खुशी	श्री गजराज सिंह नेगी	17
11	प्रमोशन	श्री दिनेश वसंत नगराले	20
12	उदास मन : एक कथा	श्री नरेन्द्र कुमार	21
13	भारत की आर्थिक प्रगति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की नीतिगत संभावनाएँ	श्री शीतलदास महावर	22
14	वृहदेश्वर मंदिर की यात्रा: एक संस्मरण	श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह	25
15	समय,ट्रेन और जीवन का चक्र: मुंबई की रफ्तार में छिपी सच्चाई	श्री अतुल सिंह	27
16	सफर	श्री शीतलदास महावर	28
17	अंतरराष्ट्रीय विवाद और उनका वैश्विक असर: भारत की शांति - दूत भूमिका	श्री विशाल वर्मन	29
18	मेरी माटी मेरा देश: एक ध्येय	श्री शिवेंद्र प्रताप सिंह	32
19	12 ज्योतिर्लिंगों का महत्व	श्री संतोष राजाराम राणे	34
20	अभिभावक	श्री निर्मल शर्मा	37
21	सोहन लाल - एक शिक्षक	श्री दिलीप कुमार मिश्रा	39
22	भारत का इलैक्ट्रिक वाहनों की ओर रुख	श्रीमती रश्मि महावर	47
23	भारत के उच्च शिक्षा मॉडल पर पुनर्विचार	श्री दीपक	50
24	साहित्य और समाज	श्री अंजित कुमार	53
25	युद्ध और शांति	श्री गजराज सिंह नेगी	56
26	काशी एक संस्मरण	श्री प्रमोद कुमार राय	58
27	भारत में युवा बेरोजगारी की स्थिति: आकांशाओं और अवसरों के बीच खाई	श्री सिन्दबाज कुरैशी	60
28	गाँव और शहर की जीवनशैली में अंतर	श्री चमन लाल	62

* टिप्पणियां हिंदी में लिखिए |

* मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए |

* शब्दों के लिए अटकिए नहीं |

* अशुद्धियों से घबराइए नहीं |

* अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए |

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

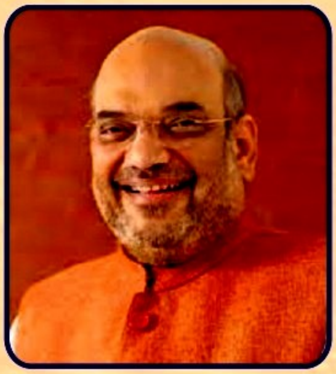

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्‌भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

शुभकामना संदेश

"भारत में हर भाषा का सम्मान है, पर हिन्दी ईश्वर का वरदान है"

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "नव विहान" के सप्तम अंक का प्रकाशन करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है जो कि कार्यालय में हिन्दी प्रयोग को नया रूप देगी |

इस अवसर पर हम सभी को यह समझना जरूरी है कि जैसे हिन्दी को लागू करने के लिए नियम तो बनाये जा सकते हैं लेकिन उसको अपनाने के लिए जब तक मन से नहीं सोचेगें तब तक महात्मा गांधी जी के द्वारा देखा गया सपना सच नहीं हो सकता | हम दूसरे देशों की नकल तो बड़ी आसानी से करते हुए कहते हैं कि वह देश तो विकसित हो चुका है, लेकिन उसकी विकाश में वहां की भाषा का और जनमानस की भाषा के योगदान को नकारा नहीं जा सकता | इसको भी नहीं भूला जा सकता की प्रत्येक देश में दो भाषाओँ का प्रयोग किया जाता है, पहली तो अन्तर्राष्ट्रीय भाषा जो कि राजनीतिज्ञों और वैज्ञानिकों के प्रयोग के लिए है लेकिन अंतर्देशीय कार्यक्रमों के लिए राजभाषा का प्रयोग जरूरी है | जैसे कि किसी भी देश का विकास कोई एक व्यक्ति नहीं कर सकता, उसी प्रकार किसी भाषा का प्रचार व प्रसार कोई एक नहीं कर सकता वरन हम सभी को मिलकर अपनी तरफ से एक छोटे से छोटा प्रयास करना चाहिए |

अभी देश विश्व की तीसरी आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है और आशा करते हैं कि वर्ष २०४७ तक विकसित देश बन जाएगा | इसके विकास के साथ - साथ हमें हिंदी को भी पूर्ण राजभाषा बनाने का प्रयास करना है | इसके लिए हम सभी को अपने अनुभागों व विभागों में हिंदी को प्रोत्साहन देना है और विभाग द्वारा तय किये गए मानदंडो के अनुरूप उतरना है |

"नव विहान" पत्रिका के सप्तम अंक के प्रकाश पर कार्यालय परिवार और रचनाकारों को मेरी तरफ से बहुत-बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं |

अदिति

(अदिति शर्मा)
प्रधान निदेशक

संदेश

मैं कार्यालय की हिंदी पत्रिका “नव विहान” के सप्तम अंक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ | राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की दिशा में इस पत्रिका का प्रकाशन निश्चित ही एक अत्यंत सराहनीय कदम है |

यह पत्रिका कार्यालय की रचनात्मक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का दर्पण है | यह न केवल कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन को प्रतिबिंबित करती है, बल्कि कार्यालय के बुद्धिजीविओं को भी अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है |

यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का एक छोटा सा माध्यम है | मैं रचनाकारों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिए धन्यवाद देते हुए इसके उतरोत्तर प्रगति की कामना करती हूँ |

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की ढेर सारी शुभकामनाओं सहित |

(नीना मोरे)
उपनिदेशक

संपादकीय

हिंदी भाषा पूरे देश को एक करने में अहम् भूमिका निभाती है | भाषा जाति-पाति, ऊँच -नीच, धर्म, समुदाय, क्षेत्र आदि की सम्वेदनाओं से दूर रहती है | भाषा को आप जितना अपनाओगे वह आपको उतना ही अपनाएगी |

इसी प्रकार अपने कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "नव विहान" के सप्तम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत ही हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ |

हमारे कार्यालय द्वारा हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कई प्रयास किए गए हैं, जिसमें, महानिदेशक महोदया द्वारा दिए गये "पांच बिन्दुयों" वाले निर्देश प्रमुख हैं, सम्पूर्ण विभाग और उसके अधीनस्थ विभाग इसको लागू कर चुके हैं | इसी कारण हमने प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग बढ़ाया है, इसको इसी प्रकार जारी रखने का संकल्प करते हैं ताकि भविष्य में शत प्रतिशत कर सकें |

इसी के साथ "नव विहान" पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल के सभी सदस्यों का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ|

मुझे पूर्ण विश्वास है की यह अंक भी पूर्व अंको की भाँति सभी को पसंद आएगा और भविष्य में भी आप लोग अपनी रचनाओं से इसे सक्षम करते रहेंगें |

(के पी बालाचंद्रन)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

बच्चे बड़े हो जाते हैं

राकेश कुमार
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

"आनंद, मैं ऑफिस के काम से दो दिन के लिए दिल्ली आया हुआ हूँ . काम निबट गया है. अभी मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ." मुख्यालय कार्यालय से बाहर निकलते ही मैने अपने भतीजे आनंद को फोन किया. "ठीक है चाचाजी, आप मेट्रो पकड़कर नॉएडा सेक्टर 52 आ जाईये, मैं वहीँ स्टेशन के बाहर आपकी प्रतीक्षा करूँगा" आनंद ने जवाब दिया।

मेट्रो में बैठते ही मन यादों के गलियारे में घूमने लगा जब आनंद बहुत छोटा था और अपने मम्मी-पापा यानि मेरे भैया-भाभी के साथ मेरे घर मुंबई आया था और तब शिर्डी घूमने का कार्यक्रम बना था। हम सभी लोग मुंबई से शिर्डी गए और वहां साईं बाबा मंदिर में दर्शन को गए। मंदिर में दर्शन करके निकलने के बाद सभी लोग पास के बाज़ार में खरीदारी करने में व्यस्त हो गए और किसी का ध्यान आनंद की ओर था ही नहीं। अचानक से आनंद खिलौने की एक दुकान देख कर मचल गया और उसकी ओर चला गया। तभी मेरा ध्यान अपने आसपास गया और मैंने पाया कि बाज़ार में काफी भीड-भाड थी और आनंद कहीं दिख नहीं रहा था। मैं घबरा गया और इधर-उधर देखने लगा। तभी मैंने देखा कि आनंद दूर खिलौनों की दूकान में खड़ा है। मैंने वहां जाकर एक थप्पड़ उसे लगाया और उसका हाथ पकड़ कर ले के आया और सभी को बोला कि आपलोग अपनी खरीदारी करो पर मैं बस इसका हाथ पकड़कर रखूँगा। और अगले तीन घंटे मैंने आनंद का हाथ एक बार भी छोड़ा ही नहीं।

"अगला स्टेशन नॉएडा सेक्टर 52" मेट्रो की ये आवाज सुनते ही मेरी तन्द्रा भंग हुई और मेट्रो के रुकते ही मैं उतर कर स्टेशन के बाहर आ गया। वहां आनंद मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे लेकर वो अपने किराये के रूम पर गया। उसने कहा कि पिछले महीने ही वो पुराने रूम से यहाँ शिफ्ट हुआ है। फिर मैंने काफी देर तक उसके ऑफिस और इधर-उधर की बातें की। उसके बाद हम खाना खाने को होटल गए। होटल से निकल कर दिल्ली वापस आने को हम मेट्रो स्टेशन आये। स्टेशन पर मुझे छोड़कर जब आनंद वापस जाने को मुड़ा तब मेरा ध्यान मेट्रो स्टेशन के आस-पास की अथाह भीड़ की ओर गया और मैंने घबरा के उसका हाथ पकड़ लिया और कहा कि "इतनी भीड़ है, मैं तुम्हे अकेले नहीं जाने दूंगा"। ये सुन कर वो हंसने लगा और कहा "चाचाजी, अब मैं बड़ा हो गया हूँ"। ये बोल कर वह आत्मविश्वास भरे कदमो से भीड़ में आगे बढ़ गया और मैं सोचने लगा के वाकई एक दिन बच्चे बड़े हो जाते हैं।

घर के ही वास्ते

दिलीप कुमार मिश्रा,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

घर से निकल चला हूँ,
घर के ही वास्ते।
अनजान सा सफ़र है,
अनजान रास्ते।।

***

ये रास्ते पूछे हैं,
जाना है कहाँ?
कैसे कहूँ मैं इनसे,
घर के रास्ते।।

***

सब कुछ मिला यहाँ,
पर माँ, माटी न पा सका।
वो, गलियाँ और चौराहे,
मैं, न भुला सका।।

***

खुद मैं तो आ गया,
पर, खुद को न ला सका।
खुद को ही छोड़ आया हूँ,
मैं, घर के वास्ते।

***

घर से निकल चला हूँ

कठिन समय

दिनेश वसंत नगराळे
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

सीप भी यूं मोतीयों की,
बरसात न कर पाय
जो कंकर घुसे सीप में,
तो ही मोती बन पाय ।

रामबोला दुबे जी,
अगर पत्नी से डांट ना खाते
त्याग गृहस्थ जीवन,
तुलसी दास ना बन पाते

कोयले के खदान में,
हीरा पाया जाता है
पर बिना घिसे वह,
चमक कहाँ पाता है

मक्खन,
दूध मे होता है,
पर बिना दही को घुर्णन किये,
वह बाहर न आ पाता है

पत्थरों में बसें क्षारीय तत्व,
जो शारीरिक कमजोरी भगाते है
दबाव सहे पहाड़ी का तभी तो,
वो शिलाजीत बन पाते हैं

कठिन समय आना जीवन में,
अति आवश्यक होता है
आग में तपकर ही सोना,
कुंदन बन पाता है

भारत में सरकारी कार्यालयों की संस्कृति: एक विश्लेषण

अर्पिता गुप्ता,
सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत में सरकारी कार्यालय न केवल प्रशासनिक ढांचे का आधार हैं, बल्कि यह देश की सामाजिक-आर्थिक प्रगति का भी दर्पण हैं। सरकारी कार्यालयों की संस्कृति, जो दशकों से चली आ रही परंपराओं, नौकरशाही और आधुनिक सुधारों का मिश्रण है, समाज और प्रशासन के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है। हालांकि, इस संस्कृति में कई खामियां और सुधार की संभावनाएं भी मौजूद हैं। यह लेख सरकारी कार्यालयों की संस्कृति, इसकी विशेषताओं, चुनौतियों और सुधार की दिशा में उठाए जा रहे कदमों पर प्रकाश डालता है।

सरकारी कार्यालयों की विशेषताएं

भारत में सरकारी कार्यालयों की संस्कृति को औपचारिकता, पदानुक्रम और प्रक्रिया-केंद्रित दृष्टिकोण से परिभाषित किया जाता है। कर्मचारी कार्य को नियमों और प्रोटोकॉल के अनुसार करते हैं, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक काल से विरासत में मिली नौकरशाही का हिस्सा है। कार्यालयों में फाइलों का मूवमेंट, लिखित दस्तावेजीकरण और अनुमोदन की लंबी प्रक्रिया आम है। यह प्रणाली सुनिश्चित करती है कि निर्णय लेने में पारदर्शिता बनी रहे, लेकिन यह अक्सर धीमी और जटिल हो जाती है।

चुनौतियां और समस्याएं

सरकारी कार्यालयों की संस्कृति कई चुनौतियों से ग्रस्त है। पहली और सबसे बड़ी समस्या है **नौकरशाही की जटिलता**। लंबी प्रक्रियाएं और कागजी कार्रवाई के कारण जनता को सेवाएं प्राप्त करने में देरी होती है। उदाहरण के लिए, एक साधारण प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए कई बार अलग-अलग विभागों के चक्कर काटने पड़ते हैं। यह न केवल नागरिकों में असंतोष पैदा करता है, बल्कि भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा देता है एवं सरकार के प्रति नागरिको का विश्वास भी कम करता है|

दूसरी चुनौती है **कार्य संस्कृति में नवाचार और प्रौद्योगिकी का सीमित उपयोग।** यद्यपि डिजिटल इंडिया जैसे पहल ने कुछ सुधार किए हैं, कई कार्यालयों में अभी भी पुराने तरीकों का बोलबाला है। कर्मचारियों में प्रौद्योगिकी के प्रति प्रशिक्षण और उत्साह की कमी देखी जाती है। इसके अलावा, कुछ कर्मचारियों में जवाबदेही की कमी और कार्य के प्रति उदासीनता भी एक गंभीर मुद्दा है, जो जनता के विश्वास को कम करता है।

तीसरा, **लैंगिक और सामाजिक समावेशिता** की कमी भी एक समस्या है। हालांकि महिलाओं की भागीदारी सरकारी नौकरियों में बढ़ रही है, फिर भी कार्यस्थल पर लैंगिक संवेदनशीलता और समान अवसरों की कमी देखी जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों के कार्यालयों में यह समस्या और भी गंभीर है।

सुधार के प्रयास

सरकारी कार्यालयों की संस्कृति में सुधार के लिए सरकार ने कई कदम उठाए हैं। **डिजिटल इंडिया** पहल के तहत ई-गवर्नेंस को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे कई सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध हो रही हैं। उदाहरण के लिए, पासपोर्ट सेवा, आयकर रिटर्न और आधार से संबंधित सेवाएं अब डिजिटल रूप से आसानी से उपलब्ध हैं। यह न केवल समय बचाता है, बल्कि पारदर्शिता भी बढ़ाता है।

कर्मचारियों के **प्रशिक्षण और कौशल विकास** पर भी ध्यान दिया जा रहा है। मिशन कर्मयोगी जैसे कार्यक्रम कर्मचारियों की क्षमता निर्माण और कार्य संस्कृति में बदलाव के लिए शुरू किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, भ्रष्टाचार को कम करने के लिए सख्त निगरानी और शिकायत निवारण तंत्र स्थापित किए गए हैं, जैसे कि सेंट्रल विजिलेंस कमीशन और ऑनलाइन शिकायत पोर्टल।

लैंगिक समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए भी नीतियां लागू की जा रही हैं। कार्यस्थलों पर यौन उत्पीड़न रोकथाम के लिए पॉश एक्ट और महिलाओं के लिए विशेष अवकाश नीतियां इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

भविष्य की दिशा

सरकारी कार्यालयों की संस्कृति को और अधिक जन-केंद्रित और कुशल बनाने के लिए कुछ ठोस कदमों की आवश्यकता है। पहला, प्रक्रियाओं को सरल और डिजिटल करना होगा ताकि नागरिकों को त्वरित सेवाएं मिल सकें। दूसरा, कर्मचारियों में जवाबदेही और प्रेरणा बढ़ाने के लिए प्रदर्शन-आधारित प्रोत्साहन और प्रशिक्षण पर जोर देना होगा। तीसरा, कार्यस्थलों को अधिक समावेशी बनाना होगा, जहां सभी लिंग और सामाजिक समूह समान अवसर और सम्मान प्राप्त करें।

अंत में, सरकारी कार्यालयों की संस्कृति में सुधार न केवल प्रशासनिक दक्षता के लिए जरूरी है, बल्कि यह भारत के विकास के व्यापक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भी महत्वपूर्ण है। एक पारदर्शी, कुशल और समावेशी कार्य संस्कृति न केवल कर्मचारियों का मनोबल बढ़ाएगी, बल्कि जनता के बीच सरकार के प्रति विश्वास को भी मजबूत करेगी। आइए, हम एक ऐसी कार्य संस्कृति की दिशा में कदम उठाएं जो भारत के उज्ज्वल भविष्य का आधार बने।

****

"हिंदी हमारी मातृभाषा है,
यह हमारी आत्मा की आवाज़ है।"

केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत
कथकली से तेय्यम तक

मीनू देवन
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

भारत विविधताओं का देश है, और हर राज्य की अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान है। दक्षिण भारत का एक छोटा लेकिन अत्यंत समृद्ध राज्य, **केरल**, अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक धरोहर के लिए भी जाना जाता है। यह राज्य न सिर्फ भारत में, बल्कि विश्व स्तर पर भी अपनी पारंपरिक कलाओं, संगीत, नृत्य, त्योहारों और परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। कथकली, मोहिनीयाट्टम, तेय्यम, कूटियाट्टम जैसी कई शास्त्रीय और लोक कलाएँ केरल की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती हैं।

कथकली: रंगों और भावों की अनुपम कला

कथकली केरल की सबसे प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य-नाट्य शैली है। इसकी उत्पत्ति 17वीं शताब्दी में मानी जाती है। यह नृत्य न केवल अपनी भव्य वेशभूषा, रंगीन मेकअप और मुखौटों के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसकी प्रस्तुति में नृत्य, संगीत, अभिनय और कथा-वाचन का अनोखा संगम होता है। इसमें संवाद नहीं बोला जाता, बल्कि भाव, मुद्रा और संगीत के समन्वय से कहानी का संप्रेषण किया जाता है। कथकली का संगीत पारंपरिक सोपान संगीत पर आधारित होता है। कथकली में कलाकार महाभारत और रामायण जैसे प्राचीन ग्रंथों की कथाओं को शारीरिक हाव-भाव और नेत्र-अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। यह नृत्य मुख्यतः पुरुषों द्वारा किया जाता है और इसकी तैयारी में कई घंटे लगते हैं।

मोहिनीयाट्टम और कूटियाट्टम: स्त्री सौंदर्य और नाटकीयता का संगम

मोहिनीयाट्टम, केरल की एक और शास्त्रीय नृत्य शैली है, जो विशेष रूप से महिलाओं द्वारा प्रस्तुत की जाती है। इसका नाम "मोहिनी" (विष्णु अवतार) से लिया गया है, जो सौंदर्य और मोहकता की प्रतीक है। यह नृत्य शैली लयात्मक, कोमल और भावनात्मक होती है, जिसमें संगीत और शारीरिक अभिव्यक्ति के माध्यम से कथा कही जाती है।

कूटियाट्टम, भारत का सबसे प्राचीन संस्कृत नाट्य रूप माना जाता है, जिसे यूनेस्को ने "मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर" के रूप में मान्यता दी है। यह नाट्य परंपरा प्राचीन मंदिरों में शास्त्रीय कथाओं को मंचित करने की परंपरा है, जो विशेष रूप से चाक्यार और नांगियार नामक समुदायों द्वारा निभाई जाती है।

तेय्यम: लोक संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति

तेय्यम, केरल के उत्तरी भाग, विशेषकर कासरगोड और कन्नूर जिलों की प्रमुख लोक-नाट्य शैली है। 'तेय्यम' शब्द 'दैवम्' से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है - देवता। यह नृत्य-रूप, देवताओं, योद्धाओं और पौराणिक पात्रों का जीवंत चित्रण करता है। तेय्यम केवल एक नृत्य नहीं, बल्कि एक धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठान भी है, जिसमें कलाकार स्वयं को देवता के रूप में प्रस्तुत करते हैं और भक्त उन्हें भगवान का प्रतीक मानते हुए उनसे आशीर्वाद लेते हैं। तेय्यम का प्रदर्शन मंदिरों या विशेष धार्मिक स्थलों पर होता है, विशेषकर मंदिर परिसर के बाहर, जिसे *कावु* कहा जाता है।

कलाकार महीनों तक कठोर व्रत रखते हैं, शरीर को रंगों और अलंकरण से सजाते हैं, और फिर भक्तिपूर्वक नृत्य करते हुए 'दैवीय शक्ति' को आमंत्रित करते हैं। इस प्रक्रिया को *देव प्रवेश* भी कहा जाता है। प्रदर्शन के दौरान कलाकारों पर एक प्रकार की तन्मयता या 'त्रान्स' की स्थिति आ जाती है, जिससे वे स्वयं को देवता का माध्यम मानते हैं।

तेय्यम की सबसे खास बात यह है कि इसमें कलाकार अग्नि पर चलना, तलवार नृत्य, और आत्म-संवेदनाओं से परिपूर्ण अभिनय करते हैं। इसकी प्रस्तुति रात भर चलती है और यह अनुष्ठान गहराई में लोकमान्यताओं और विश्वासों से जुड़ा होता है।

तेय्यम न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक न्याय और जन आस्था का प्रतीक भी है। इसमें कई बार निचली जातियों या हाशिए पर रहे समुदायों के नायकों को देवता के रूप में पूजा जाता है, जिससे केरल की सामाजिक संरचना में समरसता और समानता का संदेश मिलता है।

केरल की सांस्कृतिक विविधता का सार

केरल की सांस्कृतिक धरोहर केवल कलाओं तक सीमित नहीं है। ओणम, विशु, त्रिशूर पूरम जैसे त्योहार, आयुर्वेद, पारंपरिक वास्तुकला, मलयालम साहित्य और सांप्रदायिक सौहार्द भी इस विरासत के अभिन्न अंग हैं। यहाँ की संस्कृति प्रकृति, अध्यात्म, कला और विज्ञान का अद्भुत समन्वय है।

कथकली की शास्त्रीय गरिमा हो या तेय्यम की लोक ऊर्जा – दोनों ही केरल की आत्मा को दर्शाते हैं। यह विरासत पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित की जाती रही है और आज भी नई पीढ़ी इसे अपनाकर आगे बढ़ रही है।

केरल की सांस्कृतिक विरासत भारत की विविधताओं और गहराई का जीवंत उदाहरण है। कथकली से लेकर तेय्यम तक की यात्रा, केवल कलात्मक नहीं बल्कि आध्यात्मिक और सामाजिक भी है। इन कलाओं को संरक्षित रखना न केवल केरल, बल्कि सम्पूर्ण मानवता की सांस्कृतिक धरोहर को बचाने के समान है। केरल जैसा राज्य हमें सिखाता है कि परंपरा और आधुनिकता साथ-साथ कैसे चल सकती हैं।

****

खुशी

गजराज सिंह नेगी
लेखापरीक्षक

खुशी जीवन की सबसे बड़ी जरूरत और उद्देश्य है। हर कोई चाहता है कि वह जीवन में खुश रहे, लेकिन खुश रहना आसान नहीं होता। खुश रहने के लिए हमें अपनी सोच, जीवनशैली और व्यवहार में कुछ सकारात्मक बदलाव करने होते हैं। खुशी केवल बाहर की चीजों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह हमारे दिल और सोच की शांति से मिलती है। इस लेख में हम जानेंगे कि खुशी पाने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

सकारात्मक सोच अपनाएं

खुश रहने का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है सकारात्मक सोच रखना। जब हम जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखते हैं, तो हर कठिनाई में हम समाधान खोज पाते हैं। नकारात्मक सोच हमारे मन को तनाव और बेचैनी से भर देती है, जिससे खुशी दूर हो जाती है। इसलिए हमें हर परिस्थिति में अच्छे पक्ष को देखने की आदत डालनी चाहिए।

संतोष करना सीखें

संतोष जीवन में खुशी पाने का एक महत्वपूर्ण मंत्र है। जब हम अपनी इच्छाओं को सीमित करते हैं और जो भी हमारे पास है, उसी में खुश रहते हैं, तो हमारा मन शांत और प्रसन्न रहता है। अधीरता और अधिक पाने की लालसा हमें हमेशा असंतुष्ट और परेशान रखती है। इसलिए संतोष का भाव हमें सच्ची खुशी की ओर ले जाता है।

स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन वास करता है। इसलिए हमें नियमित व्यायाम करना चाहिए, संतुलित आहार लेना चाहिए और पर्याप्त नींद लेनी चाहिए। स्वस्थ जीवनशैली से न केवल हमारा शरीर मजबूत रहता है, बल्कि तनाव भी कम होता है और हम जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को भी बेहतर तरीके से महसूस कर पाते हैं।

अच्छे संबंध बनाएं

हम इंसान सामाजिक प्राणी हैं। अच्छे परिवारिक और सामाजिक संबंध हमें खुशी देते हैं। परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताना, उनकी बातें सुनना और अपनी बात साझा करना हमारे मन को संतुष्टि और खुशी प्रदान करता है। अकेलापन और गलतफहमियां अक्सर दुख का कारण बनती हैं, इसलिए रिश्तों को मजबूत बनाना जरूरी है।

अपनी रुचि और शौक को समय दें

खुशी पाने के लिए अपने शौक और रुचियों को समय देना बहुत जरूरी है। चाहे वह संगीत हो, पढ़ाई हो, खेल-कूद हो या कला, अपने मनपसंद कामों में व्यस्त रहना हमें आनंदित करता है। इससे हमारा मन प्रसन्न रहता है और जीवन में ऊर्जा बनी रहती है।

तनाव से बचें और मन को शांत रखें

आधुनिक जीवन की भागदौड़ में तनाव आम बात हो गई है। तनाव हमारे शरीर और मन दोनों को प्रभावित करता है और खुशी को दूर कर देता है। योग, ध्यान, गहरी सांस लेना और प्रकृति के बीच समय बिताना तनाव को कम करने में मदद करता है। मानसिक शांति खुशी का मूल आधार है।

दूसरों की मदद करें

दूसरों की सहायता करने से मन में संतोष और खुशी मिलती है। जब हम जरूरतमंदों की मदद करते हैं, तो हमारा मन प्रसन्न होता है और हमें जीवन का एक उद्देश्य मिलता है। इससे हमारे अंदर सकारात्मक ऊर्जा आती है और हम खुश रहते हैं।

अपने आप को स्वीकार करें

खुशी के लिए यह जरूरी है कि हम अपने आप को पूरी तरह स्वीकार करें। अपनी खूबियों के साथ-साथ अपनी कमियों को भी पहचानना और उनसे मेलजोल बैठाना हमें मानसिक शांति देता है। खुद को स्वीकार करने से हमें आत्मविश्वास मिलता है और हम दूसरों से तुलना करना छोड़ देते हैं।

क्षमा करने का गुण अपनाएं

नफरत, क्रोध और जलन हमारे मन को परेशान करते हैं और खुशी से दूर कर देते हैं। इसलिए दूसरों की गलतियों को क्षमा कर देना चाहिए। क्षमा से हमारे दिल में प्रेम और सहानुभूति बढ़ती है, जो खुशी का एक बड़ा स्रोत है।

लक्ष्य निर्धारित करें और उन्हें पूरा करें

छोटे-छोटे लक्ष्य बनाकर उन्हें पूरा करने से हमें जीवन में सफलता और संतोष मिलता है। इससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है और हम अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव ला पाते हैं। लक्ष्य की प्राप्ति की खुशी हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

समय का सही उपयोग करें

समय प्रबंधन हमारे जीवन में खुशहाली लाने का एक जरिया है। यदि हम अपना समय व्यर्थ न गवाएं और इसे सही दिशा में लगाएं, तो हमारा जीवन संतुलित और खुशहाल रहता है। सही समय पर काम करना तनाव को भी कम करता है।

नकारात्मक लोगों से दूरी बनाए रखें

हमारे आस-पास के लोग हमारी सोच और भावनाओं पर प्रभाव डालते हैं। नकारात्मक सोच रखने वाले लोगों से दूरी बनाना चाहिए और सकारात्मक, उत्साहपूर्ण लोगों के साथ रहना चाहिए। इससे हमारे मन में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है।

अपने अनुभवों से सीखें

जीवन में हमें सफलता के साथ-साथ असफलताओं का भी सामना करना पड़ता है। असफलताओं को निराशा न मानकर उनसे सीखना चाहिए। यह हमें और मजबूत बनाता है और खुशी पाने में मदद करता है।

प्रकृति के साथ समय बिताएं

प्रकृति मन को शांति देती है। प्रकृति के बीच समय बिताने से मानसिक थकान दूर होती है और हम फिर से तरोताजा महसूस करते हैं। प्रकृति की सुंदरता का आनंद लेकर हम खुश और शांत महसूस करते हैं।

खुद को लगातार प्रेरित करें

खुश रहने के लिए खुद को प्रेरित रखना जरूरी है। सकारात्मक किताबें पढ़ें, अच्छे विचार सुनें और अपने आप को उत्साहित रखें। इससे हम जीवन की चुनौतियों का सामना कर सकते हैं और खुश रह सकते हैं।

खुशी हमारे विचारों और जीवन की दृष्टि पर निर्भर करती है। सकारात्मक सोच, संतोष, स्वस्थ जीवनशैली, अच्छे संबंध, अपने शौक को पूरा करना, तनाव से बचाव, क्षमा, दूसरों की मदद, और खुद को स्वीकार करना—ये सभी बातें मिलकर हमें सच्ची खुशी प्रदान करती हैं। इसलिए हमें चाहिए कि हम इन आदतों को अपने जीवन में अपनाएं और एक खुशहाल जीवन जिएं।

****

"भाषा के बिना संस्कृति अधूरी है,
और हिंदी के बिना भारत अधूरा है।"

"हिंदी वह बंधन है जो उत्तर से दक्षिण
और पूरब से पश्चिम को जोड़ता है।"

प्रमोशन

दिनेश वसंत नगराळे
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रमोशन का लड्डू,
जो खाये वो पछताये,
ना खाये वो भी पछताये
ऐसा कुछ कुछ हाल है मेरा
2025 बेहतरीन साल है मेरा

वैसे ये झटका तो अचानक ही था,
पर संभल गया आपकी दुआ से,
आगे भी संभलता रहूंगा,
आपके साथ संगत से

आपका ऐसा ही साथ रहा तो,
दिल्ली भी मुझसे दूर नहीं,
बैठुंगा इस कुर्सी पर,
पर आपसे दूर नहीं

हम है सिपाही इस संस्था के,
भले ही मै सिपह सालार बना
आपके ही सहयोग से वजूद है मेरा,
आपसे ही रहेगा तना सिना मेरा

दुवा यही करता हूँ कि,
इस पद की गरिमा की लाज रखूं
वरिष्ठों- कनिष्ठों के अनुभव से,
रोज कुछ नया नया ज्ञान सीखूं

आपके अभिनंदन वर्षा से मैं,
कृत धन्य हो गया
आपका निस्सीम प्रेम पाकर,
मैं दो आंसू रो गया

****

उदास मन : एक कथा

नरेन्द्र कुमार
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

ये सब देख मन उदास रहता है
भाई-भाई के बीच प्यार न रहा,
बहन-बहन के बीच प्यार न रहा,
भाई-बहन के बीच प्यार न रहा,
परिवार आज कृत्रिम प्यार से सींचा जा रहा,
ये सब देख मन उदास रहता है.
कार्यालय में वरिष्ठ एवं कनिष्ठ के बीच सौहार्द न रहा,
पडोसी में अपनापन का व्यवहार ना रहा,
समाज के विभिन्न वर्गों बीच दीवार न ढाहा जा सका,
आतंकवाद एवं अलगाववाद को नष्ट न किया जा सका,
ये सब देख मन उदास रहता है.
रूस और उक्रेन के बीच शान्ति ना लायी जा सकी,
अमेरिका ने ईरान को धमकाने में कोई कसर न छोड़ी,
इजराइल एवं फिलिस्तीन शांति समझौता तक न पहुँच सके,
अमेरिका ने विश्व के देशों को अपने आर्थिक नीति पर दबाने में कोई कमी न छोड़ी
ये सब देख मन उदास रहता है.

भारत की आर्थिक प्रगति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की नीतिगत संभावनाएँ

शीतल दास महावर
वरि. लेखापरीक्षक

भारत की आर्थिक और विकासात्मक महत्त्वाकांक्षाओं के एक प्रमुख प्रवर्तक के रूप में उभर रही है। घरेलू कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) बाज़ार के वर्ष 2027 तक 17 अरब डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है और वर्तमान में 6,00,000 से अधिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) पेशेवर कार्यरत हैं। भारत में वैश्विक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रतिभा का 16% हिस्सा मौजूद है। इसका अनुप्रयोग कृषि, लॉजिस्टिक्स, MSME, स्वास्थ्य सेवा और ऊर्जा क्षेत्रों तक व्याप्त है। आधार, ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ONDC) और UPI जैसे प्लेटफॉर्म का लाभ उठाते हुए, भारत समावेशी परिवर्तन के लिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) को एकीकृत करने के लिये तैयार है। हालाँकि, इस क्षमता को साकार करने के लिये बुनियादी अवसंरचना, कौशल विकास, शासन और समानता सुनिश्चित करने वाला एक सुनियोजित दृष्टिकोण आवश्यक है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का **भारत में समावेशी विकास और आर्थिक परिवर्तन पर प्रभाव :**

अर्थव्यवस्था तथा रोज़गार पर प्रभाव:

o **विशाल आर्थिक क्षमता:** भारत का कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) बाज़ार वर्ष 2027 तक तिगुना होकर 17 अरब डॉलर तक पहुँचने की उम्मीद है, जो सालाना 25-35% की दर से बढ़ रहा है।

o **रोज़गार और उत्पादकता को बढ़ावा:** डेलॉइट और नैसकॉम के अनुसार, वर्ष 2027 तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) से 1.25 मिलियन घरेलू नौकरियों के सृजन होने का अनुमान है।

o **प्रतिभा में वैश्विक क्षमता:** भारत में वैश्विक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रतिभा का 16% हिस्सा है, जो मात्रा के मामले में संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दूसरे स्थान पर है।

o **कृषि उत्पादकता में वृद्धि:**

o **कृषि कार्यबल का सशक्तीकरण:** भारत का 46.1% से अधिक कार्यबल कृषि क्षेत्र में कार्यरत है, जो प्रायः कम उत्पादकता और जलवायु तनाव से ग्रस्त रहता है।

o **जैव विज्ञान और ऊर्जा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) :**

जैव-विनिर्माण में वृद्धि को गति देना: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रेडिक्टिव मॉडलिंग और जैव प्रक्रिया अनुकूलन के माध्यम से भारत के जैव-विनिर्माण (Biomanufacturing) और जैव विज्ञान क्षेत्र को उत्प्रेरित कर रहा है।

o **ऊर्जा और संवहनीयता योगदान:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) पूर्वानुमानित ग्रिड प्रबंधन, नवीकरणीय पूर्वानुमान और सभी क्षेत्रों में कुशल ऊर्जा उपयोग को सक्षम बनाता है।

o **सार्वजनिक सेवा वितरण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) :**

o **शिक्षा का परिवर्तन:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एकीकरण भारत के 15 लाख वार्षिक इंजीनियरिंग स्नातकों की ज़रूरतों को पूरा कर सकता है, जिनमें से कई अल्प-रोज़गार का सामना करते हैं।

सार्वजनिक अवसंरचना कासुदृढ़ीकरण: आधारप्रणाली, UPI और ONDC सहित भारत का डिजिटल अवसंरचना, विस्तारणीय एवं समावेशी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) हस्तक्षेपों को सुगम बनाता है।

भारत की कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रगति में प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?

✦ **डिजिटल बुनियादी अवसंरचना की कमी:** ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी इंटरनेट की सीमित उपलब्धता और उपकरणों की पहुँच सीमित है, जिससे कृत्रिम बुद्धिमत्ता(AI)की समावेशी क्षमता पर असर पड़ रहा है।

✦ **कंप्यूटिंग और डेटा सीमाएँ**: भारत वैश्विक डेटा का 20% उत्पन्न करता है, लेकिन उसके पास केवल 2% डेटा केंद्र और कंप्यूटिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर है।

✦ **कमज़ोर संस्थागत कार्यढाँचा:** अमेरिका, चीन, ब्रिटेन और यूरोपीय संघ जैसी अन्य अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं के विपरीत, भारत में एक अंतर-क्षेत्रीय राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) रणनीति का अभाव है।

अनुसंधान और शैक्षणिक पिछड़ापन: वैश्विक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) रैंकिंग में भारत के विश्वविद्यालयों का प्रतिनिधित्व कम है और PhD का परिणाम कम बना हुआ है।

विकास के लिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग करने हेतु भारत के रणनीतिक उपाय :

✦ **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) मिशन:** भारत ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) मिशन (₹10,372 करोड़ के बजट के साथ) जैसी पहलों के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के क्षेत्र में निरंतर प्रगति की है।

फ्यूचरस्किल्स पहल: यह संयुक्त पहल युवाओं को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) , डेटा साइंस और उभरती तकनीक में प्रशिक्षित करती है, जिससे नौकरी के लिये तत्परता सुनिश्चित होती है।इसका लक्ष्य इंजीनियरिंग कॉलेजों, ITI और उद्योग समूहों में रिस्किलिंग एंड अपस्किलिंग है।

राष्ट्रीय सेमीकंडक्टर मिशन: 10 अरब डॉलर से अधिक के PLI प्रोत्साहनों के साथ, इसका उद्देश्य घरेलू चिप निर्माण और डिज़ाइन क्षमता का निर्माण करना है।

✦ **MSME के लिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI):** ये नीतियाँ भारत के व्यापारिक आधार के 90% हिस्से अर्थात् सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) क्षेत्र के लिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता (कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तक अभिगम को बढ़ावा देती हैं।

✦ **गूगल कार्यक्रमों के साथ आगे बढ़ना:** एशिया प्रशांत क्षेत्र में 6 करोड़ से अधिक लोगों को प्रशिक्षित किया गया, जिसका एक प्रमुख लाभार्थी भारत है।

सर्वम कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और कृत्रिम पहल: स्टार्टअप सर्वम-M और कृत्रिम के बहुभाषी संवादी टूल जैसे भारत-केंद्रित LLM प्रोग्राम बना रहे हैं।

✦ **BioE3 और स्वास्थ्य सेवा अनुप्रयोग**: भारत की BioE3 नीति और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) -एकीकृत स्वास्थ्य सेवा प्लेटफॉर्म का उद्देश्य जैव-निर्माण एवं व्यक्तिगत चिकित्सा को बढ़ावा देना है।

स्मार्ट ऊर्जा एकीकरण: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ऊर्जा प्रणालियों में स्मार्ट ग्रिड, दोष पहचान और माँग प्रतिक्रिया को सक्षम बनाता है।

समावेशी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) भविष्य के निर्माण के लिये नीतिगत और संस्थागत सुधारों की आवश्यकता:

✦ **संरक्षक संस्थानों का निर्माण:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास को जनकल्याण की दिशा में निर्देशित करने के लिये विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी ऐसी संस्थाओं की स्थापना की जानी चाहिये जो मार्गदर्शक या संचालक की भूमिका निभाएँ।

✦ **कौशल और शिक्षा के अंतराल को कम करना:** केवल प्रतिष्ठित संस्थानों में ही नहीं, बल्कि ITI, पॉलिटेक्निक और टियर-2/3 कॉलेजों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) कौशल को एकीकृत किया जाना चाहिये।

✦ **उद्योग-अकादमिक सहयोग को प्रोत्साहित करना:** फेलोशिप, सह-प्रयोगशालाओं और IP-साझाकरण मॉडल के माध्यम से गहन तकनीकी अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

✦ **समतामूलक अवसंरचना सुनिश्चित करना:** समावेशिता सुनिश्चित करते हुए, टियर-2 और ग्रामीण भारत में कंप्यूटिंग एवं डेटा अवसंरचना का विस्तार किया जाना चाहिये।

✦ **वैश्विक और स्थानीय साझेदारियों को बढ़ावा:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) मानक-निर्धारण और स्थानीयकरण के लिये बहुपक्षीय सहयोग एवं स्थानीय उद्यमिता को बढ़ावा दिया जाना चाहिये।

✦ **श्रम बाज़ार परिवर्तन के लिये तैयारी: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) -**संचालित स्वचालन से प्रभावित होने वाले श्रमिकों की पहचान कर उनके लिये पुनःकौशल प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिये तथा संभावित रोज़गार परिवर्तनों का पूर्वानुमान लगाया जाना चाहिये।

शासन और नियोजन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) को शामिल करना: नीति अनुकरण, लक्ष्यीकरण दक्षता और जलवायु अनुकूलन योजना के लिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग किया जाना चाहिये।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)) उत्पादकता बढ़ाकर, रोज़गार सृजन करके और सेवा वितरण में सुधार करके भारत की अर्थव्यवस्था को बदल सकती है। सही संस्थागत कार्यढाँचे, समान अभिगम और बहु-क्षेत्रीय तत्परता के साथ, भारत न केवल विकास के लिये, बल्कि समावेशी एवं सतत् विकास के लिये भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग कर सकता है, तथा नैतिक व मानव-केंद्रित कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) नवाचार में वैश्विक अग्रणी बन सकता है।

****

वृहदेश्वर मंदिर की यात्रा : एक संस्मरण

रवीन्द्र प्रताप सिंह
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

भारत की धरती संस्कृति, इतिहास और भव्य स्थापत्य कला से ओतप्रोत है। यहाँ के हर प्रदेश में मंदिर, गुफाएँ, किले और स्मारक अपने भीतर एक अनूठी कथा समेटे हुए हैं। दक्षिण भारत की यात्रा करते समय जब मैंने तंजावुर स्थित *वृहदेश्वर मंदिर* जाने का संकल्प लिया, तब मुझे अंदाज़ा भी नहीं था कि यह अनुभव मेरी स्मृतियों में एक अमिट छाप छोड़ जाएगा। यह यात्रा केवल ईश्वर-दर्शन की नहीं, बल्कि इतिहास, स्थापत्य और भक्ति की अद्भुत अनुभूति की यात्रा थी।

यात्रा की शुरुआत

मेरी यात्रा चेन्नई से प्रारंभ हुई। रेलगाड़ी से तंजावुर पहुँचते हुए खिड़की से बाहर दिखते नारियल के वृक्ष, हरियाली से भरे खेत और गाँव की सरल जीवनशैली मन को विशेष शांति दे रहे थे। तंजावुर स्टेशन पर उतरते ही ऐसा लगा जैसे मैं समय के पहिये को पीछे घुमाकर एक ऐसे नगर में आ गया हूँ, जिसकी दीवारों में इतिहास की गूँज समाई हुई है।

वृहदेश्वर का प्रथम दर्शन

जब मैं मंदिर प्रांगण पहुँचा तो मेरी आँखें स्तब्ध रह गईं। विशाल प्रकोष्ठ, ऊँचे गोपुरम और लाल पत्थरों से निर्मित दीवारें अद्भुत आभा बिखेर रही थीं। मंदिर का मुख्य *विमान* (शिखर) लगभग 216 फीट ऊँचा है, जिसे देखकर मन में एक ही प्रश्न उठा - आज से लगभग हज़ार वर्ष पूर्व इतने भव्य मंदिर का निर्माण आखिर कैसे संभव हुआ होगा? कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण चोल वंश के महान सम्राट **राजराज चोल प्रथम** ने 11वीं शताब्दी में करवाया था। यह मंदिर न केवल उनकी धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि दक्षिण भारत की स्थापत्य परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण भी है।

नंदी की भव्यता

मंदिर प्रांगण में प्रवेश करते ही विशाल नंदी की प्रतिमा दिखाई देती है। यह नंदी लगभग 16 फीट लंबा और 13 फीट ऊँचा है। पूरी प्रतिमा एक ही शिलाखंड से निर्मित है। नंदी का यह स्वरूप इतना सजीव प्रतीत होता है कि लगता है मानो अभी उठकर भगवान शिव के चरणों की ओर बढ़ जाएगा।

गरभगृह और शिवलिंग

मंदिर का सबसे महत्वपूर्ण भाग है गरभगृह, जिसमें *महाशिवलिंग* स्थापित है। यह शिवलिंग स्वयं में अद्‌वितीय है - लगभग 12 फीट ऊँचा और भव्यता से परिपूर्ण। जैसे ही मैंने दर्शन किया, एक अलौकिक शांति ने मुझे घेर लिया। वहाँ उपस्थित हर भक्त की आँखों में भक्ति की गहराई स्पष्ट झलक रही थी।

भित्तिचित्र और शिल्पकला

मंदिर की दीवारों पर बने चित्र और नक्काशियाँ भारतीय कला की ऊँचाई को दर्शाते हैं। चोलकालीन चित्रकला, जिसमें देव-देवियों, नर्तकियों और योद्धाओं के दृश्य अंकित हैं, आज भी जीवंत लगते हैं। यह अद्भुत है कि इतने वर्षों के बाद भी इन रंगों की चमक फीकी नहीं पड़ी।

ध्वनि और भक्ति का संगम

शाम के समय जब आरती शुरू हुई, तब नगाड़ों की गूँज, शंख की ध्वनि और भक्तों के मंत्रोच्चार से पूरा वातावरण पवित्र हो उठा। उस क्षण मुझे लगा कि यह केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि आध्यात्मिक ऊर्जा का विशाल केंद्र है, जहाँ देवत्व और मानवता का मिलन होता है।

इतिहास से संवाद

स्थानीय गाइड से बातचीत के दौरान मुझे ज्ञात हुआ कि वृहदेश्वर मंदिर को *राजराजेश्वरम* भी कहा जाता है। यह मंदिर यूनेस्को की *विश्व धरोहर* सूची में शामिल है। चोल वंश की शक्ति, भक्ति और स्थापत्य कला का यह उत्कृष्ट उदाहरण है। यहाँ आकर समझ आता है कि क्यों भारतीय संस्कृति को "अक्षय निधि" कहा जाता है।

व्यक्तिगत अनुभव

जब मैं मंदिर प्रांगण से बाहर निकला, तो मन में एक गहरी संतुष्टि और गर्व का भाव था। गर्व इस बात का कि मैं उस धरती का निवासी हूँ जहाँ ऐसी अद्भुत धरोहरें जन्मीं। संतुष्टि इस बात की कि मुझे जीवन में यह अनुभव प्राप्त हुआ।

यात्रा का प्रभाव

वृहदेश्वर की यह यात्रा मेरे लिए केवल एक स्मृति नहीं, बल्कि जीवन की एक सीख भी बन गई। इसने मुझे सिखाया कि सच्ची भक्ति केवल पूजा-पाठ में नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और धरोहरों को समझने और उनसे जुड़ने में है।

समापन

जब भी मैं वृहदेश्वर मंदिर की उस यात्रा को याद करता हूँ, तो मन एक बार फिर वही दृश्य जीवंत कर लेता है - विशाल नंदी, ऊँचा शिखर, गूँजती हुई घंटियाँ और भक्तों की श्रद्धा। यह अनुभव जीवनभर मेरे साथ रहेगा। भारत की सांस्कृतिक धरोहरों में वृहदेश्वर मंदिर का स्थान सदैव सर्वोच्च रहेगा। यह मंदिर न केवल भगवान शिव की उपासना का केंद्र है, बल्कि भारतीय स्थापत्य और कला की अमर गाथा है।

****

समय, ट्रेन और जीवन का चक्र:
मुंबई की रफ्तार में छिपी सच्चाई

अतुल सिंह
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

मुंबई – यह शहर सिर्फ ईंट-पत्थरों का बना नहीं, बल्कि यह समय और उम्मीदों की रफ्तार से चलने वाला जीवित तंत्र है। यहाँ की लोकल ट्रेनें महज यातायात का साधन नहीं, बल्कि जीवन के चक्र (wheel of life) का प्रतीक हैं – हर रोज़ घूमता हुआ, अनवरत चलता हुआ।

हर सुबह जब पहली ट्रेन प्लेटफॉर्म से सरकती है, तो लगता है जैसे जीवन ने एक बार फिर करवट ली हो। हर डिब्बे में बैठे लोग किसी मंज़िल की ओर भाग रहे हैं – कोई रोज़गार के लिए, कोई शिक्षा के लिए, तो कोई केवल अपने सपनों को पकड़ने की होड़ में।

मुंबई की ट्रेनें समय की धड़कन हैं और इनकी पटरियाँ उस जीवन-चक्र की रेखाएँ हैं, जिन पर यह शहर संतुलन बनाकर आगे बढ़ता है। एक ट्रेन छूटना यहाँ केवल गंतव्य चूकना नहीं होता, वह जीवन के किसी पल को खो देना सा लगता है।

यहाँ समय थमता नहीं, जैसे जीवन नहीं रुकता। हर स्टेशन एक मोड़ है, हर सफ़र एक अनुभव। और इस पूरे चक्र को चलाते हैं वे पहिए – जो ट्रेन के नीचे घूमते हैं, और जो हमारे भीतर जीवन के संघर्षों से प्रेरित होकर निरंतर गतिशील रहते हैं।

मुंबई हमें सिखाती है – समय को पकड़ना नहीं, उसके साथ बहना है। क्योंकि इस शहर में जो ट्रेनें छूटती हैं, वे केवल गाड़ियों की नहीं होतीं, वे अवसरों की होती हैं। और जो समय की रफ्तार को समझ जाता है, वही इस जीवन-चक्र में खुद को खोने के बजाय, पा लेता है।

****

सफर

शीतल दास महावर
वरि. लेखापरीक्षक

मैं चल रहा हूँ सफर में
थोड़ा धीमे थोड़ा तेज,
ख्वाहिश को समेटे
जैसे हो कोई परवेज,
मैं चल रहा हूँ सफर में...

ओस की बूंदों को
अधर में समाता,
रूह को रूमानी बनाता,
भरता रंग कल्पनाओं के
जैसे कोई रंगरेज,
मैं चल रहा हूँ सफर में
थोड़ा धीमे थोड़ा तेज..!!

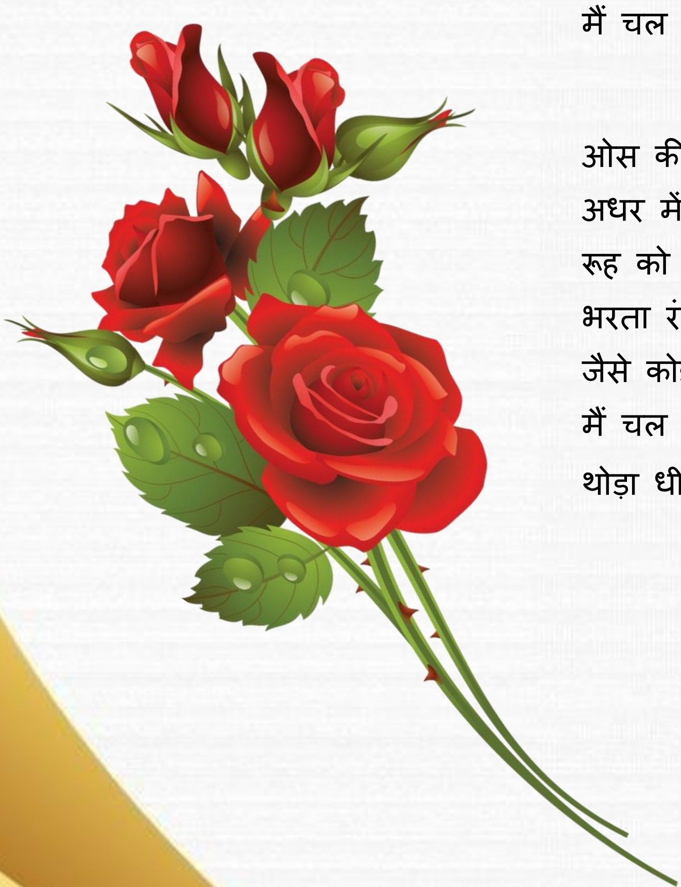

अंतरराष्ट्रीय विवाद और उनका वैश्विक असर : भारत की शांति-दूत भूमिका

विशाल वर्मन
आशुलिपिक

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ देशों के बीच सहयोग, व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा है। किंतु दुर्भाग्यपूर्ण वास्तविकता यह भी है कि सीमाओं, संसाधनों, विचारधाराओं और धार्मिक मतभेदों को लेकर संघर्ष भी बढ़ते गए। 21वीं सदी में जब पूरी दुनिया विज्ञान, तकनीक और डिजिटलीकरण से जुड़ रही है, तब भी युद्ध, आतंकवाद और भू-राजनीतिक विवाद अंतरराष्ट्रीय स्थिरता के लिए सबसे बड़ी चुनौती बने हुए हैं।

इन विवादों का प्रभाव केवल लड़ने वाले देशों तक सीमित नहीं रहता बल्कि पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था, ऊर्जा, खाद्य सुरक्षा और सामाजिक संतुलन पर पड़ता है। आज रूस-यूक्रेन युद्ध, इज़राइल -पैलेस्टाइन संघर्ष, अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा और भारत-पाक तनाव – सबके उदाहरण हैं कि किस प्रकार विवाद वैश्विक शांति को बाधित करते हैं।

प्रमुख अंतरराष्ट्रीय विवाद और उनके प्रभाव

1. रूस-यूक्रेन युद्ध (2022 से अब तक)

फरवरी 2022 में शुरू हुआ रूस-यूक्रेन युद्ध आज तक जारी है।

- आर्थिक असर : यूरोप में गैस और तेल की आपूर्ति रुकने से ऊर्जा संकट पैदा हुआ। पेट्रोल-डीज़ल की कीमतों में उछाल आया, जिसका असर भारत जैसे विकासशील देशों तक पहुँचा।
- खाद्य संकट : यूक्रेन गेहूं, मक्का और सूरजमुखी तेल का प्रमुख निर्यातक है। युद्ध के कारण अनाज की आपूर्ति बाधित हुई और वैश्विक स्तर पर खाद्य महंगाई बढ़ी।

मानवीय संकट : लाखों लोग शरणार्थी बने, जिससे यूरोपीय देशों पर बोझ बढ़ा।

2. इज़राइल-पैलेस्टाइन संघर्ष

2023-24 में गाज़ा पट्टी में बढ़ा संघर्ष दुनिया के लिए गंभीर चुनौती बना।

- तेल बाजार पर असर : मध्य-पूर्व दुनिया का प्रमुख तेल उत्पादक क्षेत्र है। युद्ध से तेल आपूर्ति अस्थिर हुई और अंतरराष्ट्रीय बाजार में उतार-चढ़ाव बढ़ा।

सामाजिक असर : हजारों नागरिक मारे गए, लाखों लोग विस्थापित हुए। बच्चों और महिलाओं पर इसका गहरा असर पड़ा।

3. अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा

- ताइवान विवाद : अमेरिका और चीन के बीच ताइवान को लेकर लगातार तनाव है।
- व्यापार युद्ध : तकनीकी और आर्थिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा से वैश्विक सप्लाई-चेन प्रभावित हो रही है। सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रॉनिक्स और दवा उद्योगों में कीमतें बढ़ी हैं।

नए शीत युद्ध की आहट : यह प्रतिस्पर्धा दुनिया को दो ध्रुवों में बाँट सकती है, जो शांति के लिए खतरनाक है।

4. एशिया और अफ्रीका के आंतरिक संघर्ष

- सूडान, सोमालिया और म्यांमार में गृहयुद्ध और तख़्तापलट जारी हैं।
- इससे वहाँ के नागरिक शिक्षा, स्वास्थ्य और रोज़गार से वंचित हो रहे हैं।

लाखों लोग पलायन कर रहे हैं, जिससे मानवीय संकट गहराता जा रहा है।

भारत-पाकिस्तान विवाद : संघर्ष और प्रतिरोध

भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद लंबे समय से चला आ रहा है। यह मुख्यतः कश्मीर मुद्दा, सीमा पार आतंकवाद और धार्मिक कट्टरता पर आधारित है।

- पाकिस्तान लगातार आतंकवादी संगठनों को समर्थन देता आया है।

भारत को कई बार बड़े आतंकी हमलों का सामना करना पड़ा, जिनमें उरी हमला (2016) और पुलवामा हमला (2019) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

भारत की जवाबी कार्रवाई

भारत ने हमेशा यह सिद्ध किया है कि शांति उसकी प्राथमिकता है, लेकिन राष्ट्रीय सुरक्षा पर कोई समझौता नहीं होगा।

1. सर्जिकल स्ट्राइक (2016)

o उरी हमले में 19 सैनिक शहीद हुए।

o इसके बाद भारतीय सेना ने नियंत्रण रेखा के पार जाकर आतंकियों के ठिकानों को ध्वस्त किया।

o बालाकोट एयर स्ट्राइक (2019)

o पुलवामा हमले में 40 से अधिक सीआरपीएफ जवान शहीद हुए।

o इसके जवाब में भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के बालाकोट में आतंकी शिविरों पर बमबारी की।

o अन्य ऑपरेशन (जैसे ऑपरेशन रक्षक, ऑपरेशन सिंधूर इत्यादि)

o भारतीय सेना ने निरंतर सीमा पार घुसपैठ और आतंकी ठिकानों को खत्म करने के लिए अभियान चलाए।

इन अभियानों ने पाकिस्तान और पूरी दुनिया को यह संदेश दिया कि भारत अपनी संप्रभुता की रक्षा के लिए किसी भी हद तक जा सकता है।

इन विवादों के आर्थिक और सामाजिक असर

1. व्यापार और निवेश पर असर

o युद्ध और संघर्षों से अंतरराष्ट्रीय बाजार अस्थिर होते हैं।

o विदेशी निवेशक असुरक्षा की स्थिति में निवेश करने से बचते हैं।

o ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा संकट

o रूस-यूक्रेन युद्ध से गैस और तेल की कीमतें बढ़ीं।

o अनाज और खाद्य तेल की आपूर्ति बाधित हुई, जिससे विकासशील देशों को महंगाई का सामना करना पड़ा।

o मानवीय संकट

o युद्धग्रस्त देशों में लाखों लोग विस्थापित हो गए।

o शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था चरमरा गई।

o विकासशील देशों पर अतिरिक्त बोझ

o महंगाई, पेट्रोल-डीज़ल की कीमतें और आयात लागत बढ़ने से गरीब देशों की अर्थव्यवस्था कमजोर हुई।

भारत जैसे देशों को भी इसका असर झेलना पड़ा।

भारत की शांति-दूत भूमिका

भारत का प्राचीन दर्शन "वसुधैव कुटुम्बकम्" हमेशा से विश्व शांति का संदेश देता रहा है।

- जी20 अध्यक्षता (2023) में भारत ने "एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य" का नारा दिया।
- रूस-यूक्रेन युद्ध में भारत ने तटस्थ रहकर वार्ता और शांति की वकालत की।
- इज़राइल-पैलेस्टाइन संघर्ष में भारत ने आतंकवाद की निंदा की, लेकिन निर्दोष नागरिकों की सुरक्षा की भी बात की।
- भारत अफ्रीका और एशिया के गरीब देशों को दवाइयाँ, खाद्यान्न और आर्थिक सहयोग देता रहा है।

कोविड-19 महामारी में भारत ने "वैक्सीन मित्र" बनकर 100 से अधिक देशों को टीके पहुँचाए।

भारत की यही नीति उसे विश्व मंच पर एक जिम्मेदार राष्ट्र और शांति-दूत के रूप में स्थापित करती है।

निष्कर्ष

आज दुनिया जिन परिस्थितियों से गुजर रही है, उसमें यह साफ है कि युद्ध किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकता। युद्ध केवल विनाश, गरीबी, महंगाई और असुरक्षा को जन्म देते हैं।

भारत ने अपने इतिहास और वर्तमान दोनों में यह सिद्ध किया है कि –

जब आवश्यकता हो, तो वह अपनी संप्रभुता और नागरिकों की सुरक्षा के लिए कठोर प्रतिरोध करता है।

लेकिन साथ ही वह शांति, सहयोग और संवाद के रास्ते को हमेशा खुला रखता है।

इसी कारण भारत आज न केवल "उभरती हुई आर्थिक शक्ति" है, बल्कि विश्व मंच पर "शांति और सहयोग का दूत" भी माना जाता है। यही वह दृष्टिकोण है जो आने वाली पीढ़ियों को स्थायी शांति और समृद्धि की ओर ले जा सकता है।

****

मेरी माटी, मेरा देश : एक ध्येय

शिवेंद्र प्रताप सिंह
पुत्र श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह
हिंदी अनुवादक

भारत एक ऐसा राष्ट्र है जिसे सदा से ही उसकी **माटी की खुशबू** और **संस्कृति की गहराई** ने महान बनाया है। हमारी धरती केवल भूमि का टुकड़ा नहीं है, बल्कि यह हमारी अस्मिता, हमारी पहचान और हमारी आत्मा का आधार है। जब हम कहते हैं *"मेरी माटी, मेरा देश"*, तो यह केवल एक नारा नहीं होता, बल्कि यह भावना होती है कि हम जिस भूमि पर जन्मे, पले-बढ़े और शिक्षा ग्रहण की, वह हमारे जीवन का सबसे बड़ा वरदान है।

भूमि से जुड़ाव का महत्व

भारत की मिट्टी केवल भूगोल नहीं है, यह हमारी **संस्कृति, परंपरा और भावनाओं** का केंद्र है। यही मिट्टी हमें जीवन देती है, अन्न देती है, जल का आधार बनती है और हमारी पीढ़ियों को पालती है। भारतीय संस्कृति में भूमि को *"माता"* का दर्जा दिया गया है। खेत की मिट्टी हो या गाँव का कच्चा आँगन, उसमें एक अपनापन और आत्मीयता छिपी होती है। "मेरी माटी, मेरा देश" कहना उस **ऋण** को स्वीकार करना है जो हम इस भूमि के प्रति सदैव चुकाने में असमर्थ रहते हैं।

इतिहास और मिट्टी का रिश्ता

भारत का इतिहास इसकी मिट्टी में बसता है। इस धरती ने **सिंधु घाटी सभ्यता**, **वैदिक संस्कृति**, **बुद्ध और महावीर का दर्शन**, और **सम्राट अशोक से लेकर महात्मा गांधी तक** के विचारों को जन्म दिया। हर प्रदेश की मिट्टी में अलग रंग और स्वाद है। राजस्थान की रेतीली मिट्टी वीरता का प्रतीक है, पंजाब की उपजाऊ मिट्टी समृद्धि का आधार है, बिहार-उत्तर प्रदेश की गंगा-जमुना की मिट्टी सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है और दक्षिण भारत की काली मिट्टी विज्ञान व प्रगति की कहानियाँ सुनाती है। यही विविधता भारत को विशेष बनाती है।

स्वतंत्रता संग्राम और मिट्टी की महिमा

स्वतंत्रता संग्राम में भी मिट्टी का महत्व बार-बार उभरा। जब **भगत सिंह** ने फाँसी से पहले जेल की कोठरी में मिट्टी को माथे से लगाया, जब **चंद्रशेखर आज़ाद** ने आज़ादी की शपथ ली, जब **नेताजी सुभाष बोस** ने कहा *"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा"*, तो इन सबके पीछे अपनी मातृभूमि की मिट्टी के प्रति प्रेम था। आजादी के मतवालों ने यह साबित किया कि इस मिट्टी की रक्षा के लिए वे प्राणों की आहुति देने में भी पीछे नहीं हटेंगे।

आज का भारत और मिट्टी से जुड़ाव

आधुनिक भारत में जब हम तेज़ी से तकनीकी और औद्योगिक विकास की ओर बढ़ रहे हैं, तब भी हमारी मिट्टी हमें अपनी जड़ों से जोड़ती है। शहरों में रहते हुए भी लोग अपने गाँव की मिट्टी की खुशबू याद करते हैं। **माटी की महक** और **कच्चे घरों की यादें** इंसान को सदा उसके मूल से जोड़े रखती हैं।

सरकार द्वारा चलाए गए **“मेरी माटी, मेरा देश” अभियान** ने इस भावना को और गहरा किया है। इस अभियान के अंतर्गत शहीदों को सम्मान, गाँव-गाँव स्मारक निर्माण, पंच प्रण संकल्प और वटवृक्ष जैसे पौधे लगाने का संकल्प लिया गया है। यह न केवल मिट्टी से जुड़ाव का प्रतीक है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को यह संदेश देने का प्रयास भी है कि **राष्ट्र प्रेम केवल शब्दों से नहीं, कर्मों से सिद्ध होता है**।

मिट्टी और किसान

किसान हमारी मिट्टी के सबसे बड़े संरक्षक हैं। वे अपने पसीने से खेतों को सींचते हैं और हमें अन्न प्रदान करते हैं। जब हम *“मेरी माटी, मेरा देश”* कहते हैं तो उसमें किसान का परिश्रम और समर्पण भी शामिल है। भारत की मिट्टी ही है जिसने देश को *“अन्नदाता”* किसानों का देश बनाया।

मिट्टी और सैनिक

सैनिक भी इसी मिट्टी की संतान हैं। वे इस भूमि की रक्षा के लिए सीमा पर डटे रहते हैं। जब वे कहते हैं कि *“माँ, मैं देश की मिट्टी के लिए प्राण न्योछावर कर दूँगा”*, तो यह केवल शपथ नहीं, बल्कि उनके अस्तित्व का हिस्सा होता है। शहीद सैनिक जब धरती में समा जाते हैं तो वे वास्तव में इस मिट्टी में मिलकर अमर हो जाते हैं।

भाषा, संस्कृति और माटी

हमारी भाषाएँ और परंपराएँ भी इस मिट्टी से जुड़ी हैं। भोजपुरी, अवधी, पंजाबी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला - सभी भाषाएँ अपनी-अपनी मिट्टी की महक को संजोए हुए हैं। लोकगीत, लोकनृत्य और त्यौहार हमारी माटी के बिना अधूरे हैं।

पर्यावरण और मिट्टी का संरक्षण

आज आवश्यकता है कि हम अपनी मिट्टी की रक्षा करें। **मिट्टी का कटाव, प्रदूषण और रासायनिक खतरे** हमारी धरती को कमजोर कर रहे हैं। यदि हम अपनी मिट्टी को बचाएँगे नहीं, तो आने वाली पीढ़ियों का भविष्य अंधकारमय हो सकता है। इसीलिए जल संरक्षण, वृक्षारोपण और जैविक खेती जैसे कदम उठाना जरूरी है।

निष्कर्ष: माटी ही हमारी पहचान

“मेरी माटी, मेरा देश” केवल भावुक वाक्य नहीं है। यह वह शक्ति है जो हमें अपनी जड़ों से जोड़ती है। यह हमें याद दिलाती है कि चाहे हम कितनी भी ऊँचाइयाँ छू लें, हमारी असली ताकत उसी मिट्टी में है जिसमें हमने जन्म लिया।

यह मिट्टी हमें **आत्मनिर्भरता, बलिदान, सेवा और संस्कार** सिखाती है। जब तक हम इस मिट्टी का सम्मान करते रहेंगे, तब तक हमारा राष्ट्र सशक्त और समृद्ध बना रहेगा।

" राष्ट्रभक्ति का सबसे मधुर गीत
हिंदी में गाया जा सकता है।"

12 ज्योतिर्लिंगों का महत्व

संतोष राजाराम राणे
टंकण/लिपिक

द्वादश (12) ज्योतिर्लिंग वे पवित्र स्थान हैं जहाँ भगवान शिव ज्योति (प्रकाश) के स्तंभ के रूप में प्रकट हुए थे, और इन पवित्र स्थलों के दर्शन से भक्तों को उनके पापों से मुक्ति मिलती है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इन ज्योतिर्लिंगों में से प्रत्येक की अपनी अनूठी विशेषताएं और महात्म्य है।

12 ज्योतिर्लिंगों का महत्व

मोक्ष की प्राप्ति:- ज्योतिर्लिंगों का दर्शन करने से भक्त जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो जाते हैं और मोक्ष प्राप्त करते हैं।

कष्टों से मुक्ति:-इन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन और स्मरण मात्र से सभी प्रकार के दुख और कष्ट दूर हो जाते हैं।

शिव पुराण में उल्लेख:-इन ज्योतिर्लिंगों का उल्लेख शिव पुराण जैसे प्राचीन हिंदू ग्रंथों में मिलता है।

दिव्य स्वरूप:-इन्हें भगवान शिव का दीप्तिमान प्रतीक माना जाता है, जहाँ वह अपनी सर्वोच्च दिव्यता के रूप में प्रकट हुए थे।

कुछ प्रमुख ज्योतिर्लिंग और उनकी विशेषताएँ

सोमनाथ ज्योतिर्लिंग (गुजरात):- यह पहला ज्योतिर्लिंग माना जाता है, यह भगवान शिव को समर्पित है, और गुजरात के सौराष्ट्र में स्थित है. मान्यताओं के अनुसार, जो भक्त यहाँ दर्शन करते हैं उनकी सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं. यह ज्योतिर्लिंग स्वयंभू है और इसकी ऊर्जा ब्रह्मांड को नियंत्रित करती है. यह चंद्रमा (सोम) के स्वामी के रूप में शिव के रूप 'सोमनाथ' से जुड़ा है, जिन्होंने चंद्रमा को श्राप से मुक्त किया था.

मल्लिकार्जुन (आंध्र प्रदेश) :- भगवान शिव और पार्वती को समर्पित एक हिंदू मंदिर है , जो भारत के आंध्र प्रदेश राज्य के श्रीशैलम में स्थित है। यह शैव और शक्ति , दोनों ही हिंदू संप्रदायों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इस मंदिर को शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक और हिंदू देवी के बावन शक्तिपीठों में से एक माना जाता है । शिव की पूजा मल्लिकार्जुन के रूप में की जाती है और उनका प्रतिनिधित्व लिंगम द्वारा किया जाता है । उनकी पत्नी पार्वती को भ्रमराम्बा के रूप में दर्शाया गया है।

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग (मध्य प्रदेश):- की मुख्य विशेषताएं यह हैं कि यह स्वयंभू और दक्षिणमुखी है, जो मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रसिद्ध है। यह उज्जैन शहर के केंद्र में स्थित है और इसका भव्य मंदिर, विशेष रूप से अपनी दैनिक भस्म आरती के लिए जाना जाता है, जिसमें पुजारी भस्म का लेप करके दर्शन कराते हैं। यह भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है और शिवपुराण के अनुसार शिव के अखंड रूप का प्रतिनिधित्व करता है।

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग (मध्य प्रदेश):- मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी के तट पर, "ॐ" आकार के मान्धाता पर्वत पर स्थित एक महत्वपूर्ण ज्योतिर्लिंग है। यह 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है और यहां भगवान शिव के दर्शन का विशेष महत्व है, जहां राजा मंधाता और कुबेर ने शिव की तपस्या की थी। नर्मदा और कावेरी नदी के संगम पर स्थित होने के कारण इस स्थान का विशेष महत्व है। यह हिंदुओं का एक पवित्र स्थान है और यहां जैन संप्रदाय के सिद्धवरकूट भी स्थित हैं।

केदारनाथ ज्योतिर्लिंग (उत्तराखंड):- की मुख्य विशेषताएँ हैं कि यह बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है, यहाँ भगवान शिव के महिष (भैंस) रूप के पिछला भाग (पूंछ) की पूजा की जाती है, और पांडवों ने इसका निर्माण कराया था. यह मंदिर उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में समुद्र तल से 3,583 मीटर की ऊंचाई पर चोराबारी ग्लेशियर के पास स्थित है, और इसके कपाट वर्ष में केवल 6 महीने ही खुलते हैं.

भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग (महाराष्ट्र):- की मुख्य विशेषताएँ ये हैं कि यह भगवान शिव को समर्पित 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है, यह महाराष्ट्र के पुणे में स्थित है, और यहाँ भगवान शिव ने त्रिपुरासुर राक्षस का वध किया था, जिससे इस स्थान का नाम पड़ा। मंदिर की एक अनोखी बात यह है कि ज्योतिर्लिंग के दर्शन के लिए सीढ़ियों से उतरना पड़ता है, जबकि कई अन्य मंदिरों में सीढ़ियां चढ़कर दर्शन होते हैं। मंदिर के पास एक नदी बहती है, जिसे भीमा नदी कहते हैं। मान्यता है कि यह भगवान शिव के पसीने की बूंदों से बनी है जो उनके और राक्षस भीम के युद्ध के दौरान निकले थे। अक्टूबर से मार्च तक का समय दर्शन के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है, क्योंकि इस दौरान मौसम सुहावना होता है।

काशी विश्वनाथ (उत्तर प्रदेश):- मंदिर का महत्व यह है कि यह भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है, जिसे मोक्ष प्रदान करने वाला माना जाता है। इस पवित्र नगरी को भगवान शिव का निवास स्थान भी कहा जाता है। यहां के घाटों पर शवदाह कर राख गंगा में प्रवाहित करने से मृत आत्मा को मुक्ति मिलती है। वाराणसी को मोक्ष की नगरी कहा जाता है, और यह माना जाता है कि यहां प्राण त्यागने वाले को मोक्ष की प्राप्ति होती है। काशी सप्तपुरियों में से एक है, जो हिंदू धर्म में अत्यंत पवित्र माने जाने वाले सात तीर्थ स्थलों में शामिल हैं।वाराणसी के घाट और उत्तरवाहिनी गंगा एक साथ मिलकर इस स्थान को धर्म, अध्यात्म, भक्ति और ध्यान का महत्वपूर्ण केंद्र बनाते हैं। यह स्थान धर्म और अध्यात्म के लिए एक केंद्र है, जहां भक्त आस्था और भक्ति के साथ यहां आते हैं।

त्र्यंबकेश्वर शिव मंदिर (महाराष्ट्र):- भारत के महाराष्ट्र के नासिक जिले के त्र्यंबकेश्वर तहसील के त्र्यंबक कस्बे में स्थित एक प्राचीन हिंदू मंदिर है , जो नासिक शहर से 28 किमी और नासिक रोड से 40 किमी दूर है। यह हिंदू भगवान शिव को समर्पित है और बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है जहाँ महाराष्ट्र के त्र्यंबकेश्वर में हिंदू वंशावली रजिस्टर रखे गए हैं। पवित्र गोदावरी नदी का उद्गम त्र्यंबक के पास है। त्र्यंबकेश्वर में कई हिंदू अनुष्ठान किए जाते हैं, जिसके लिए पूरे भारत से तीर्थयात्री आते हैं।मंदिर परिसर में स्थित कुसावर्त कुंड (पवित्र तालाब), जिसका निर्माण श्रीमंत सरदार रावसाहेब पारनेरकर ने करवाया था, जो इंदौर राज्य के फडणवीस थे। यह भारत की दूसरी सबसे लंबी नदी गोदावरी का उद्गम स्थल है । कुंड के किनारे सरदार फडणवीस और उनकी पत्नी की एक अर्धप्रतिमा देखी जा सकती है। वर्तमान मंदिर का निर्माण मुगल शासक औरंगजेब द्वारा ध्वस्त किए जाने के बाद पेशवा बालाजी बाजीराव ने करवाया था ।

वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग (झारखंड):- की मुख्य विशेषताएँ ये हैं: यह झारखंड के देवघर में स्थित है और इसे एक शक्तिशाली ज्योतिर्लिंग माना जाता है. यह शिव का 'वैद्यनाथ' रूप है, और यहाँ पूजा करने से शारीरिक व मानसिक रोग दूर होते हैं. यह एकमात्र ऐसा ज्योतिर्लिंग है जहाँ शिव के साथ-साथ देवी शक्ति की भी पूजा होती है और इसे शक्तिपीठ भी माना जाता है, जो इसे हिंदू विवाहों के लिए अत्यंत शुभ बनाता है । रावण की पीड़ा हरने के कारण भगवान शिव यहाँ वैद्य (चिकित्सक) रूप में प्रकट हुए, इसीलिए इस स्थान को 'बैद्यनाथ' या 'वैद्यनाथ' कहते हैं । कहा जाता है कि जो भी भक्त यहाँ श्रद्धापूर्वक भगवान का अभिषेक करता है, उसे शारीरिक और मानसिक रोगों से मुक्ति मिलती है ।

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग (गुजरात):- की मुख्य विशेषता यह है कि यह "नागों का ईश्वर" है, जो भगवान शिव का एक शक्तिशाली रूप है, और यह 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मंदिर से जुड़ी किंवदंतियों में एक राक्षस दारुक द्वारा शिव भक्त सुप्रिया का अपहरण और भगवान शिव का नागेश्वर रूप में प्रकट होकर राक्षस का वध करना शामिल है। यहां भक्तों को सीधे शिवलिंग को छूने और अभिषेक करने की अनुमति है। 'नागेश्वर' नाम का अर्थ है "नागों का ईश्वर", जो नागों के देवता, भगवान शिव का प्रतिनिधित्व करता है। माना जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने भी इस ज्योतिर्लिंग की पूजा की थी और इसका रुद्राभिषेक किया था।

रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग (तमिलनाडु):- की मुख्य विशेषता यह है कि यह भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है और यह भगवान राम से जुड़ा हुआ है; ऐसा माना जाता है कि भगवान राम ने लंका विजय के बाद ब्राह्मण हत्या के पाप से मुक्त होने के लिए यहीं पर शिवलिंग की स्थापना की थी. इसके अलावा, यहां समुद्र तट पर स्थित 22 पवित्र कुंड हैं, जिनमें स्नान करना शुभ माना जाता है और इनका संबंध समुद्र देवता से है|

घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग (महाराष्ट्र):- भारत के महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले के वेरुल गाँव में स्थित एक शिव मंदिर है । यह 12 ज्योतिर्लिंग मंदिरों में से एक है। यह मंदिर एक राष्ट्रीय संरक्षित स्थल है, जो एलोरा गुफाओं से डेढ़ किलोमीटर दूर , औरंगाबाद शहर से 30 किलोमीटर (19 मील) उत्तर-पश्चिम में और मुंबई से 300 किलोमीटर (190 मील) पूर्व-उत्तरपूर्व में स्थित है । घृष्णेश्वर का उल्लेख शिव पुराण , स्कंद पुराण , रामायण और महाभारत में मिलता है ।

****

अभिभावक

निर्मल शर्मा
डाटा एंन्ट्री ऑपरेटर

अभिभावक हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण आधार स्तंभ होते हैं। जन्म से लेकर जीवन के अंतिम क्षणों तक वे हमारे मार्गदर्शक, संरक्षक और प्रेरणास्रोत बने रहते हैं। 'अभिभावक' शब्द अपने भीतर बहुत गहरी संवेदनाओं और दायित्वों को समेटे हुए है। यह केवल माता-पिता तक सीमित नहीं है बल्कि वे सभी लोग अभिभावक की श्रेणी में आते हैं जो हमें सही मार्ग दिखाते हैं, हमारी रक्षा करते हैं और हमारे जीवन को सार्थक बनाने में सहयोग करते हैं।

बचपन से ही जब एक शिशु इस संसार में आता है तो सबसे पहले माता-पिता ही उसे गोद में लेकर पालते हैं। वे उसकी छोटी-छोटी ज़रूरतों का ध्यान रखते हैं, उसे सही और गलत का ज्ञान कराते हैं। पिता अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए परिवार की आर्थिक ज़रूरतें पूरी करते हैं जबकि माता अपने वात्सल्य और स्नेह से बच्चों का पालन-पोषण करती है। इस प्रकार दोनों मिलकर बच्चे के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास का आधार तैयार करते हैं।

अभिभावक केवल बच्चों की भौतिक ज़रूरतें ही पूरी नहीं करते, बल्कि उनके जीवन मूल्यों को भी संवारते हैं। वे हमें सत्य, ईमानदारी, मेहनत और धैर्य जैसे गुण सिखाते हैं। यह वही गुण हैं जो हमें समाज में एक अच्छा इंसान और जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं।

समाज में अभिभावकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यदि हर अभिभावक अपने बच्चों को सही संस्कार और शिक्षा दे तो निस्संदेह समाज और देश दोनों का भविष्य उज्ज्वल होगा। बच्चों में राष्ट्रप्रेम, सद्भावना और कर्तव्यनिष्ठा की भावना का विकास अभिभावक ही कर सकते हैं।

आज के समय में जब आधुनिकता और तकनीक ने हमारे जीवन को बदल दिया है, अभिभावकों की जिम्मेदारियाँ और भी बढ़ गई हैं। उन्हें बच्चों को मोबाइल, इंटरनेट और अन्य आधुनिक साधनों के सही उपयोग की शिक्षा देनी चाहिए। बच्चों को सिर्फ़ अंक प्राप्त करने की होड़ में लगाने के बजाय उनमें नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को भी जगाना अभिभावकों का ही कर्तव्य है।

अभिभावक बच्चों के पहले शिक्षक होते हैं। घर ही वह पहला विद्यालय है जहाँ बच्चा बोलना, चलना और दूसरों से व्यवहार करना सीखता है। यदि घर का वातावरण सकारात्मक हो, तो बच्चा निश्चय ही अच्छा इंसान बनता है। माता-पिता के आचरण, उनकी दिनचर्या और उनके

अभिभावक केवल मार्गदर्शक ही नहीं होते बल्कि कठिन परिस्थितियों में हमारे संरक्षक भी बनते हैं। जब जीवन में समस्याएँ आती हैं तो वही हमें सहारा देते हैं और सही निर्णय लेने में मदद करते हैं। उनका अनुभव और ज्ञान हमारे लिए दिशा-निर्देशक का काम करता है।

इतिहास गवाह है कि जिन महापुरुषों ने समाज और राष्ट्र को गौरवान्वित किया, उनके पीछे उनके अभिभावकों का अद्भुत योगदान रहा। चाहे वह महात्मा गांधी हों, स्वामी विवेकानंद हों या अन्य कोई महान व्यक्तित्व, सभी ने अपने अभिभावकों से ही प्रेरणा प्राप्त की।

बदलते समय में अभिभावक और बच्चों के बीच संवाद की आवश्यकता और भी अधिक हो गई है। अभिभावकों को बच्चों की भावनाओं को समझना चाहिए और उन्हें अपनी बात खुलकर कहने का अवसर देना चाहिए। यदि अभिभावक बच्चों के मित्र की तरह व्यवहार करें तो बच्चे भी अपने अनुभव और समस्याएँ उनके साथ बाँट सकते हैं। इससे पारिवारिक संबंध और भी मजबूत होते हैं।

अभिभावक ही बच्चों के सपनों को पंख देते हैं। वे उन्हें हौसला देते हैं कि वे अपने जीवन में जो चाहें वह बन सकते हैं। कठिनाइयों और असफलताओं के समय अभिभावकों का सहयोग ही बच्चों को संघर्ष करने और आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान करता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अभिभावक केवल परिवार ही नहीं बल्कि समाज और राष्ट्र की नींव मजबूत करने वाले स्तंभ होते हैं। उनका स्नेह, मार्गदर्शन और अनुशासन ही बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की गारंटी है। हमें चाहिए कि हम अपने अभिभावकों का सम्मान करें, उनकी बातों को समझें और उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारें।

ठीक उसी प्रकार भारत के संविधान में भारत का नियंत्रक और महालेखापरीक्षक)CAG-कैग (एक ऐसा अभिभावक है जो यह देखता है कि संसद द्वारा अनुमन्य खर्चों की सीमा से अधिक धन खर्च न होने पाए या संसद द्वारा विनियोग अधिनियम में निर्धारित मदों पर ही धन खर्च किया जाए।

****

"हिंदी का सम्मान करना भारत का सम्मान करना है।"

"हिंदी दिवस हमारे सांस्कृतिक गौरव का उत्सव है।"

सोहन लाल-एक शिक्षक

दिलीप कुमार मिश्रा
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

बात झारखंड के एक छोटे से गांव की है, जब एक शिक्षक की पदस्थापना गांव मे की जाती है। सब लोग जानते हैं की झारखंड के एक गांव मे शिक्षक की पदस्थापना होना, उस शिक्षक के लिए एक चुनौती से कम नहीं होता, वो भी तब, जब वो शिक्षक, शहर मे पला- बढा हो।

सोहन लाल, हमेशा पढाई- लिखाई में अब्बल, बडे हुए तो प्रशासन मे आना चाहते थे, परंतु वो सफल नहीं हो सके। निराश होकर, वो तैयारी ही करना छोड दिए और बच्चों को ही पढाने लग गए।एक दिन अचानक उनके घनिष्ट मित्र, श्याम लाल, जो पेशा से शिक्षक थे, की ट्रेनिंग उसी गांव मे पडी और अचानक सुबह- सुबह, वो सोहन से मिलने उनके घर, उन्हें किसी पुर्व सुचना के, आ धमके। बडे दिनों के बाद मुलाकात हो रही थी, दोनो मित्र काफी खुश थे और आज की सुबह तो सच मे एक अलग ही ताजगी ले कर आई थी, सोहन लाल के लिए।

काफी देर चर्चा के बाद, श्याम लाल ने अपने मित्र से कहा, तुम क्यों नहीं सरकारी शिक्षक के लिए प्रयास करते हो? तुम अच्छा पढाते हो, गांव मे तुम्हारे पढाने के तरीके की सब तारीफ करते हैं, देखो न, मैं भी तो लोगों से पूछते- पूछते तुम्हारे घर आ पहूंचा, और सब ने मुझे तुम्हारा मित्र समझ कर बडा आदर और सम्मान किया, और झूठ क्या बोलु, एक भला लडका था, शायद तुम्हारा ही छात्र रहा होगा, अभी गांव के बैंक मे शाखा प्रबंधक के पद पर है, उसने ही मुझे अपने कार से यहां पहुंचा दिया।

ये सब ऐसे ही तुम्हारा नाम थोडे न ले रहे हैं, तुम देखो खुद को, तुम प्रशासन मे नहीं जा सके तो क्या हुआ, तुम आज बच्चों को पढा कर इस लायक बना रहे हो कि वो एक दिन प्रशासन मे जाएंगे। मेरी एक सलाह मानो तो तुम सरकारी शिक्षक के लिए प्रयास करो, आज शिक्षक की तनखा भी ठीक-ठाक है अपने झारखंड में । तुम सरकारी शिक्षक बनकर भी अपने समाज के लिए बहोत कुछ कर सकते हो, जो शायद प्रशासन मे रहकर, कार्य के व्यस्तता के कारण, नहीं हो सकता है। हां वो लाल बत्ती वहां नहीं रहेगी, पर लाल बत्ती से उतरने वाला, तुम्हारा सम्मान ही करेगा।

सोहन लाल काफी सोचने के बाद मन बना लिया की वो भी सरकारी शिक्षक के लिए प्रयास करेगा, अब कितने दिनों तक ऐसे ही बच्चों को पढाकर, अपना जीवन यापन करेगा। संयोगवश, झारखंड सरकार ने उस वर्ष, अस्थाई शिक्षकों की नियुक्ति के लिए अखबार मे, विज्ञप्ति निकाली। सरकार इन चुने हुए शिक्षकों को अपने खर्च पर, बी. एड भी कराने बाली थी, और साथ में 35000/- रुपये प्रति मांह भी दे रही थी।

सोहन लाल को ऐसा लगा, मानो, भगवान भी यही चाहता है। और सोहन लाल ने अस्थाई शिक्षक के लिए आवेदन दे दी। सोहन लाल परीक्षा पास कर ली और सबसे पहले ये खबर अपने मित्र को बताई। आज सोहन लाल बहोत खुश था, अब वो बस नौकरी जॉइन करना चाहता था। वो बहोत कुछ सोच रहा था, अपने भविष्य के बारे मे, कई सपने संजो लिए थे उसने, और संजोता भी क्यों नहीं, अब उसे अपने सपने को पूरा करने का एक माध्यम मिल गया था। एक दिन अचानक दोपहर के समय एक डाकिया, नियुक्ति पत्र ले कर आया, अब तो क्या था, सोहन लाल ने पूरे गांव मे मिठाई बांट दी।

जब उसने नियुक्ति पत्र खोल कर देखा तो उसके माँथे पर थोडी चिंता की सिकन सी दिख रही थी। दरअसल, उसकी पदस्थापना, झारखंड के एक बिहड ग़ाँव मे हो गया था, ग़ाँव भी ऐसा वैसा नहीं, नक्सल गतिविधियों के लिए, आए दिन समाचार के पहले पन्ने पर जगह बनाने वाला गाँव। सोहन लाल, अब करता क्या, जब ओखली मे सर दे ही दिया, तो मुसल से डर कैसा, सोचकर, अगले ही दिन, जा पहुंचा अपना योगदान देने।

जब वह स्कूल पहुँचा, वो भौचक्का ही रह गया, वहाँ स्कूल तो था, पर बच्चे थे ही नहीं, स्कूल भी स्कूल कम और हड्प्पा सभ्यता के किसी खण्डर से कम नहीं लग रहा था। वो समझ नहीं रहा था, अब करना क्या है, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था, उसने अपने दोस्त श्याम लाल को फोन किया और उसे सारा वाकया सुनाया, उसका दोस्त जोर- जोर से हँस रहा था, इधर सोहन लाल गुस्सा से और लाल-पीला हो रहा था। उसने गुस्से से फोन काट दिया।

उसका दोस्त, श्याम लाल, पुन: उसे फोन करके, उससे माँफी माँगते हुए बोला, भाई, मैं तुम्हें एक बात बताना ही भुल गया, अगर बता देता तो तुम्हें ये सब नहीं झेलना पडता, वैसे सरकारी तंत्र मे तुम्हारा स्वागत है। तुम ऐसा करो, गांव के पंचायत भवन चले जाओ, सब तुम्हें वहीं मिलेंगे। ये सुनते ही, वो पंचायत भवन चला गया। अरे ये क्या, गांव के कुछ बच्चे जमीन पर बोरियां बिछाकर पढ रहे थे, या खेल रहे थे, कुछ समझ नहीं आ रहा था।

तभी सोहन लाल ने देखा की एक बूढ़ा सा आदमी थोडी दूर मे कुछ भैंसो को चारा दे रहा था, और उनके अलावा कोई बडा आदमी दिख ही नहीं रहा था, तो सोहन लाल, उस बूढ़े आदमी से जा कर अपना परिचय दिया और स्कूल का पता पूछा। वो बूढ़ा आदमी हँसते हुए बोला, आ गए तुम, हम लोग तुम्हारा ही इंतजार कर रहे थे, आओ बैठो, और तुरंत कुछ बच्चों को बुलाकर, चाय-पानी लाने को भेजा। जब तक सोहन लाल कुछ बोलता, उस बूढ़े ने, सोहन लाल को असमंजस मे देख बोला, मेरा नाम मोहन बाबू है, और मैं यहाँ हिंदी पढाता हूँ, मैंने यहाँ अपने जीवन के सुनहरे 30 साल काट दिए हैं, तुम क्यों परेशान दिख रहे हो, अरे यही हमारा स्कूल है, और यही हमारे बच्चे हैं।

अब तो मानो, सोहन लाल को सांप सुंघ लिया। अब उसे लगने लगा कि उसने गलती की। वैसे खुद को संभालते हुए, उसने मोहन सिंह से पूछा, यहाँ हम कैसे पढा सकते हैं, न स्कूल है, न बच्चे हैं, न पढाने का साधन। मोहन बाबु ने कहा, जब मै भी यहाँ, शायद तुम्हारी ही उम्र का रहा हूँगा, तो यह स्कूल जॉइन किया, बडे सपने थे, ऐसा करुंगा, वैसा करुंगा, शिक्षा के क्षेत्र मे क्रांती ला दुंगा, अपना 100 प्रतिशत दुंगा, कुछ ऐसा करुंगा कि ये गांव क्या, पूरा देश मुझे याद करे। अब तो सोहन लाल को लगने लगा कि उसने गलती की, उस रात वो मोहन बाबु के यहाँ ही रुका । उसने शाम को अपने दोस्त श्याम लाल को फोन कर बोला, यार गलती हो गई, मैं यहाँ नहीं रह पाउँगा।

श्याम लाल ने उसे समझाते हुए बोला, अरे कुछ दिन की बात है, मैं कुछ करता हूँ, शुरु मे सबको ऐसा लगता है, वैसे तुमने जो देखा, वो तो सच्चाई है, जगजाहीर है, सरकारी तंत्र ऐसा ही है, यार जिंदगी को जियो, मस्त रहो, और जैसा सिस्टम है उसी से संतुष्ट रहो, कुछ नहीं होगा, अच्छा करते हैं बात, कह कर उसने फोन काट दी।

उस रात सोहन लाल और मोहन बाबु काफी देर तक जगे, सोहन लाल के पास कई सबाल थे और मोहन बाबु मानो गूगल की तरह उसके हर सवाल का जबाब दे रहा था। बातचीत के क्रम मे सोहन लाल को पता चला कि ये जो खंडर सी स्कूल है, उसके रख-रखाव मे हर साल तकरीबन 7500 रुपया खर्च होता है, ये सुन कर सोहन लाल भौंचका था। उसने मोहन बाबु से पूछा, ये कैसे हो सकता है, वहाँ तो कुछ है ही नहीं, फिर रख-रखाव किस चीज़ की? मोहन बाबु ने उसे समझाते हुए कहा, हमें भी, यानी यहाँ पदस्थापित हरेक शिक्षक को 500 रुपये मिलते हैं उस रख रखाव के खर्च से, अब तुम भी आ गए हो तो, अगले महीने से तुम्हें भी तुम्हारा हिस्सा मिल जाएगा, तुम भी तो यहाँ पदस्थापित हो गए हो न। सोहन लाल ने जिज्ञासा वश, मोहन बाबु से पूछा, 'यहाँ कितने शिक्षक पदस्थापित है?', तो जबाब सुनकर वह बुत ही बन गया, उस स्कूल मे कुल 15 शिक्षक पदस्थापित थे। सोहन लाल बोला, अरे 15 शिक्षक बोल रहे हैं आप पर मैं तो बस आपसे ही मिला आज स्कूल में, अन्य शिक्षक?।

मोहन बाबु ने सोहन लाल से बोला, अरे काफी रात हो गई है, आज ही सब कुछ जान लोगे क्या, कुछ कल के लिए भी रखो, वैसे अब यहीं तो रहना है, चलो सो जाओ, यह बोल कर मोहन बाबु सो गए। सोहन लाल को एक तो नई जगह और इस तरह के स्थिति को देखकर रात भर नींद ही नहीं आई। सुबह होते ही वो बिना मोहन बाबु को बताए, गाँव छोडने के लिए बस-अड्डा आ पहुँचा। वो बस पकडने ही बाला था, तभी उसे एक फोन आता है, फोन पर और कोई नहीं मोहन बाबु थे। वह मोहन बाबु को सच नहीं बोल सका और बोला थोडा गांव घूमने निकला था, बस आ रहा हूँ और वह मन मसोस कर बस नहीं पकड़ सका।

सोहन लाल जब बस-अड्डा से स्कूल के तरफ जा रहे थे, अचानक एक अजनबी ने उनसे काफी पूछ-ताछ की, सोहन लाल जब तक उस अजनबी से कुछ पूछ पाता, वो कही रफु-चक्कर हो गया। सोहन लाल सोचा, छोडो जाने दो, होगा कोई सरफिरा। सुबह के 9 बजकर 30 मिनट हो रहे थे और सोहन लाल स्कूल यानी पंचायत भवन पहुँच गया था, सोहन लाल काफी हतप्रभ था कि, उसके आने के पहले ही वहाँ कुछ बच्चे आ गए थे और पंचायत भवन की साफ-सफाई कर रहे थे। बच्चों ने सोहन लाल को देखकर, उनका अभिनंदन किया, सोहन लाल ने भी उन बच्चों आ अभिनंदन स्वीकार किया, शहरी भाषा मे बोले तो इंट्रोड्क्सन हो गया।

कुछ अलग सा माहोल था, न श्याम पट्ट (ब्लैकबोर्ड) है, न बैंच, बस सोहन लाल और कुछ बच्चे। सोहन लाल ने सोचा चलो अब पढाई- लिखाई शुरु की जाए। पहला दिन था, धीरे-धीरे बच्चे भी स्कूल आ रहे थे, तकरीबन 11 बजे तक, कुल 10 बच्चे आ गए थे, यहाँ कोई पहली कक्षा, दूसरी कक्षा वाली बात नहीं थी, न ही कोई घंटी बजाने वाला, सोहन लाल और बच्चे ही स्कूल संचालक थे। सोहन लाल समझ नहीं पा रहा था, वो पढाए कैसे, हर उम्र के बच्चे हैं, किसी के पास कोई किताब नहीं है, हाँ एक कापी रखी है सब ने। उतनी ही देर मे मोहन बाबु भी आ गए। मोहन बाबु आज और खुश दिख रहे थे, सोहन लाल ने मोहन बाबु से पुछा कि बच्चों को क्या पढाना है?

यह सुनकर, मोहन बाबु हँसने लगे और बोले, यहाँ कोई पाठ्यक्रम नहीं है, आपको जो पढाना है, आप पढा सकते है, यहाँ के सर्वेसर्वा आज से आप ही हैं, वैसे भी मेरी भैंसे काफी कमजोर हो गई है, और एक तो बीमार भी है, मैं अकेला था न यहाँ पर, अब तुम आ गए हो न, सब ठीक हो जाएगा। जाओ तुम पढाओ, जो मन करे, मिलते हैं शाम को घर पर, वैसे एक बात कहूँ, तुम पहले शिक्षक हो जो आने के बाद मुझसे ये नहीं पुछे कि, अटेंडेंस कैसे बनेगा, और पढाने आ गए, बच्चों के साथ मिल कर स्कूल यानी पंचायत भवन भी साफ किया, और तो और टिकट ले कर भी बस पर नहीं चढे, लगता है तुम्हें भी ईमानदारी के कीड़े ने काट रखा है, तुम जरुर यहां पढाने आए हो।

जब सोहन लाल ने मोहन बाबु से अन्य शिक्षकों के बारे मे पुछा तो यह जानकर और भी हतप्रभ हो गया कि पिछले 10 साल मे वो पहला शिक्षक है जिसने इस गाँव मे अपना दूसरा दिन बिताया हो, और बच्चों को पढाया हो। मोहन बाबु ने उसे सीधे-सीधे कह दिया कि, तुम मुझे अकल से समझदार नहीं दिखते, तो मैं तुम्हें बता देता हूँ, जो 500 रुपया हम सब शिक्षक को मिलता है, स्कूल के रख-रखाव के नाम पर, अगर तुम मुझे दे दो, मसलन, तुम्हें देना भी नहीं पडेगा, तुम्हारा हिस्सा मैं ही रख लूंगा, तो तुम भी चाहो तो अन्य शिक्षकों के तरह ही यहाँ से जा सकते हो, मैं सब मैनेज कर लूँगा, वर्षो से करता आ रहा हूँ, और तो और, अब तो मुझे यहाँ मजा आने लगा है। सोच लो, जैसा हो मुझे बता देना, एक-दो दिनों मे।

सोहन लाल समझ गया, मोहन बाबु अच्छा आदमी नहीं है, पर कर क्या सकता था, वही तो सोहन लाल का भी सहारा था, और वो गलत कैसे, सिस्टम ने उसे लाचार बना दिया और कुछ हम जैसे लोगों ने उसे प्रलोभन दे कर उसे लालची। यह सोचकर, वो बच्चों को पढाने चला गया, आज की क्लास काफी अच्छी रही और सोहन लाल यह देखकर काफी हैरान था कि कुछ बच्चे सच मे काफी अच्छे थे, पढने मे, पर क्या होगा इनका भविष्य?

शाम को, सोहन लाल जब मोहन बाबु के यहाँ पहुँचा, तो मोहन बाबु ने काफी गर्मजोशी से उसका स्वागत किया, और चाय बना कर लाया। मोहन बाबु मे पूछा, क्या सोचा है? सोहन लाल को कुछ समझ नहीं आ रहा था की वो क्या बोले, उसने बोला, मैं कुछ दिनों के लिए अपने घर जाना चाहता हूँ। मोहन बाबु समझ गया और बोला, जाओ बाबु, कौन यहाँ मारने को आएगा, सब की अपनी जिंदगी है, मैं हूँ न, यहाँ सब संभालने को, जाओ, और घर बैठे ही उसने उसका टिकट कटवा दिया। दूसरा दिन था आज सोहन लाल का गाँव मे, आज भी रात मे उसे नींद नहीं आई।

जागकर ही रात कटी, जब वह बस पर बैठ गया, तो उसे चैन मिला, अब वो गाँव छोडकर जा रहा था, बडी गजब की अवस्था थी सोहन लाल की, उसे खुशी भी हो रही थी और वो थोडा दुखी भी था, रह-रह कर, स्कूल के बच्चों के चेहरे और उनके सवाल, उसके मन को कचोट रहे थे। बहरहाल, वो अपने घर पहुँचा, उससे मिलने गाँव के काफी लोग आ रहे थे, अब वो अच्छा महसूस कर रहा था। ये क्या, उस रात भी वह चैन से सो नहीं पाया। वो खुद को ही समझ नहीं पा रहा था, वो सोचने लगा, ये क्या होने लगा मेरे साथ, मैं तो अब अपने घर मे हूँ, फिर क्यों नहीं सो पा रहा हूँ?

सुबह- सुबह उसके दोस्त, श्याम लाल का फोन आया और सोहन लाल ने उसे अपनी आप- बीती अपने दोस्त को बताया। फिर श्याम लाल हँसने लगा, पर ये क्या, आज सोहन लाल को अपने दोस्त के हँसने पर गुस्सा नहीं आ रहा था। वो समझ रहा था कि वो मुझ पर नहीं वरन इस व्यवस्था पर हँस रहा था।

श्याम लाल ने सोहन लाल से साफ-साफ कहा कि यार व्यवस्था के साथ बह चलो, हम और तुम कुछ नहीं कर सकते, मैं जानता हूँ, तुम कैसा सोच रहे हो, पर कुछ नहीं यार, धीरे-धीरे आदत हो जाएगी, फिर तुम भी अपने जिंदगी मे धीरे-धीरे आगे बढ जाओगे।

ज्यादा सोचो मत, मस्त रहो। मुझे पता है, तुम प्रशासन मे आना चाहते थे, व्यवस्था सुधारना चाहते थे, पर जो हम सोचते हैं, वैसा हो ही जाए, यह तो संभव नहीं न। भाई, धार्मिक शिक्षा और उच्च कोटी के शब्द किताबों मे ही अच्छे लगते हैं, असल जिंदगी तो तुमने अब जीना शुरु किया है दोस्त, व्यवस्था तुम्हें बदल देगा।

रियल (real) और रील (reel) मे, a और e का ही अंतर नहीं है, भाई, सच ही काल्पनिक हो जाता है। ये सरफरोशी वाला भाव, कुछ कर गुजरने वाला भाव, अगर आ भी रहा है, मन मे न, तो इसे खुद पर हावी नहीं होने दो। दर्द ज्यादा होगा, और हासिल कुछ नहीं। जो भी चीज़ें तुमने पढी है, बचपन में, सब अपनी जगह, किताबों मे सही है, पर ज़िंदगी किताब नहीं है, मेरे भाई।

मैंने तुम्हें सरकारी शिक्षक बनने की सलाह दी थी, पर तुम्हारी बातों से मुझे लग रहा है की तुम तो खुदको स्वयंभु प्रशासक समझ बैठे हो और वो भी ऐसा प्रशासक, जो खुद को साबित करना चाहता हो। मेरी एक और सलाह मानो, छोड दो ये बचपना, 500 रुपये दे दो, उस मोहन बाबु को, और मस्त होकर अपनी जिंदगी जियो, घूमो, शादी करो, परिवार बसाओ, बहुत कुछ है करने को भाई जिंदगी में।

अब सोहन लाल गांव में रहना चाहता था, दरअसल वो स्वार्थी नहीं बन पाया और उन बच्चो का मोह, उनके भविष्य की चिंता उसे सच में अंदर से कचोट रही थी, वो कुछ करना चाहता था उन बच्चों के लिए, पर क्या? किसके भरोसे? कौन है और जो उसका साथ दे? तभी वो अगले दिन पुनः गाँव लोट आया और मोहन बाबु के पास पहुचा और बोला, मुझे रहना है इस गाँव में, मोहन बाबु हँस कर बोले, गए मेरे 500 रुपये।

मोहन बाबु ने पूछा, करोगे क्या, रहना क्यों है, अरे व्यवस्था देख तो लिया, यहाँ रहोगे तो मेरे जैसे बन जाओगे, कोई पूछने नहीं आएगा, चंद गाव के अभिभावकों को छोड़कर। सोहन लाल ने मोहन बाबू को शांत कर बैठाया और बोला मुझे आपकी मदद चाहिए, मोहन बाबू बोले, क्या? बस मत पूछिए, जो बोले करना पडेगा, बदले में मैं आपको अपनी पुरी तनखाह दूंगा। आज रात सोहन लाल काफी चैन से सो रहे थे और मोहन बाबु परेशान, क्या पता क्या करने वाला है? सुबह हुई, मोहन बाबू काफी इंतजार में थे कि कब सोहन लाल उठेगा। जब थोड़ी देर हुई तो उसने सोहन लाल को आवाज लगाया, पर उनके कमरे से कोई उत्तरा नहीं, कहीं आस पड़ोस में भी नजर नहीं आ रहे थे, तभी गाँव के कुछ लोग मिले और मोहन बाबू से औरस पूछा किसे खोज रहे हो, कहीं नए शिक्षक को तो नहीं? मोहन बाबू ने झट से बोला, हाँ-हाँ, उन्हें देखा है क्या? गाव वालों ने उसे बताया कि उसने सोहन लाल को बस पकड़कर गाँव से बाहर जाते देखा है। मोहन बाबू हँसते हुए सोचा, उसका भूत रात में ही उतर गया, भाग गया, अपना तंनख्वाह दे रहा था।

चलो अच्छा है, उसके 500 रुपये तो मै रख ही लूंगा। तभी वो क्या देखता है कि दूर से सोहन लाल आ रहे हैं। आज सोहन लाल काफी खुश थे और मैं स्कुल के लिए देर हो रहा हूँ कह कर, कल किसने देखा है, कह कर आगे बढ़ गए। मोहन बाबू भारी असमंजस में, पहली बार, मोहन बाबू अपनी भैस की चिंता किए बगैर, स्कूल पहुँच गए, दरअसल आज उनके पास काफी सवाल थे, जिसका जबाब सिर्फ सोहन लाल के पास था।

दोपहर हो गई, शाम हो गई, अब सोहन लाल और मोहन बाबू दोनो बात करते-करते घर के तरफ जा रहे थे, तभी मोहन बाबू ने सोहन लाल से पूछा तुमने मुझसे कुछ मदद माँगी थी, तुम क्या करने वाले हो? मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ? एसा क्या काम है जिसके लिए तुम अपनी पूरी तंनख्वाह मुझे देने के लिए तैयार हो गए?

सोहन लाल ने मोहन बाबू को शांत करते हुए जबाब दिया, कल सुबह होते ही सब पता चल जाएगा। रात के करीब दस बज रहे थे पर आज मोहन बाबू को नींद ही नहीं आ रही थी, पर तभी एक जोरदार धमाका होता है, दरअसल किसी ने गाँव के जर्जर स्कूल को बम से उड़ा दिया था। मोहन बाबू सोहन लाल को उठाने उसके कमरे में पहुचे तो देखा वो कमरे में नहीं थे, वो भागकर घटनास्थल पर पहुंचा, गाँव के सभी लोग रात में ही घटनास्थल पर पहुँच चुके थे, सोहन लाल पहले से वहीं थे। मोहन बाबू ने सोहन लाल से पूछा, तुमने यहाँ आने से पहले मुझे क्यों नहीं आवाज दी, मोहन बाबू बोले, मैं धमाके की आवाज सुन कर कुछ समझ नहीं पाया और तुम्हें आवाज़ देना भूल गया।

घटनास्थल पर सभी गाँव के लोग ही दिख रहे थे, कोई अनजान व्यक्ति नहीं दिख रहा था, बस मलबे और राख थी। सुबह होते ही ये खबर आग की तरह फ़ैल गई, अखबार बालों ने "नक्सलियों का शिक्षा के मंदिर पर हमला" "नक्सलियों का नया निशाना" इत्यादि कई शीर्षकों से इस खबर को अखबार के मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित किया।

अब क्या था, देखते देखते ये यह खबर राष्ट्रीय खबर बन गई और बड़े बड़े मीडिया हाउस इस खबर को कवर करने के लिए आ पहुचे गाँव। सभी सोहन लाल और मोहन बाबू से सारा वृतांत जानना चाह रहे थे, कुछ खुद से भी मिर्च- मसाला लगा रहे थे, कुल मिला कर स्कूल पर नक्सल हमला की थ्योरी टेली-मीडिया, प्रिंट मीडिया में चल रही थी और सभी सरकार के जबाब का इन्तजार कर रहे थे, कई लोग शिक्षा मंत्री जी का इस्तीफा मांग रहे थे। मीडिया वाले गाँव की खस्ता हाल सड़क, और स्कूल के मलवे को दिखाकर मानो प्रशासन और सरकार का मजाक उड़ा रहे थे।

शाम होते होते सरकार के तरफ से जबाब आया कि इस कायराना हरकत का करारा जबाब दिया जाएगा और उस स्कूल को मॉडल स्कूल घोषित करते हुए, छह महीने के अन्दर नए स्कूल का निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा, कल खुद शिक्षा मंत्री स्थिति का जायजा लेने उस स्कूल का दौरा करेंगे।

यह खबर सुन कर सभी गाँव वाले खुश थे। शाम हो गयी थी और आज का दिन भी काफी थकावट भरा था, सोहन लाल और मोहन बाबू दोनो घर आ गए थे, सोहन लाल काफी खुश थे, उनके चेहरे पर एक अलग ही सुकून था, मानो भगवान से जो मांगा हो वो मिल गया, परन्तु मोहन बाबू इस अचानक घटना से अचंभित थे। सोहन लाल ~~ने~~ मोहन बाबू को समझाते हुए बोले, क्यों चिंता कर रहे हो, थोड़े न कोई जान-माल की हानी हुई, और तो और जर्जर तो था वो स्कूल, अब नया बनेगा, वैसे भी कल शिक्षा मंत्री खुद आ रहे हैं।

मोहन बाबू ने भी सर हिलाकर हामी भरी पर अचानक से उसने सोहन लाल से पूछा, तुम मुझसे कुछ मदद चाह रहे थे न, मुझे क्या करना है अब तो बताओ। मोहन बाबू बोले कल शिक्षा मंत्री आ रहे है तो कल यहाँ सभी शिक्षक उपस्थित होने चाहिए, सोहन लाल बोले, हो जाएगा।

सुबह हुई, आज फिर हर जगह गाँव और स्कूल की खबर ही छाई हुई थी, सुबह हुआ तो देखा की स्कूल के सारे शिक्षक गाँव में मौजूद थे पर आज स्कूल को लेकर एक अलग खबर भी चल रही थी कि और मीडिया वालों को अपुष्ट सूत्रों से पता चल गया था कि जिस स्कुल को बम से उड़ा दिया गया वहां तो स्कूल चलती ही नहीं थी। अब क्या था, नक्सल एंगल हट कर, दूसरा एंगल बनता जा रहा था और मीडिया वाले सबूत चाह रहे थे कि जो भवन उड़ाया गया वहां स्कूल चल रहा था।

दोपहर के बारह बज रहे थे, शिक्षा मंत्री गाँव पहुचे, और आने के साथ सभी शिक्षकों से मुलाकात कर उनसे सच जानने की कोशिश की और सब ने उन्हें बताया कि कैसे वो सभी कितने सालों से उस भवन में जो अब नहीं है, पढ़ा रहे थे, दरअसल सब झूठ बोल रहे थे, सरकारी तंत्र है जनाव, शिक्षा मंत्री को हर साल स्कूल के रख रखाव पर हो रहे खर्च को व्योरा भी दिया गया, अब क्या, शिक्षा मंत्री को मीडिया को बताने के लिए जबाब मिल गया। वो खर्च जो सभी मोहन बाबू को गाँव में न रहने के लिए दे दिया करते थे, ही स्कूल के होने का प्रमाण बन गया, वैसे भी सरकारी तंत्र में कागज ही सच बोलता है मसलन सच जो भी हो, जो कागज मै है वही सही।

अब क्या था मीडिया भी शांत हो गया और शिक्षा मंत्री ने आदेश दिया कि जब तक नया स्कूल न बन जाए, स्कूल को पंचायत भवन में चलाया जाए, वैसे चल भी वही रहा था, और हर संभव सहयोग का आश्वासन दे कर मंत्रीजी चले गए।

तभी श्याम लाल, सोहन लाल के मित्र जिन्होंने सोहन लाल को शिक्षक बनने को प्रोत्साहित किया था, का फोन आता है और, वो सोहन लाल को बधाई देकर बोलते है, सच में तुम प्रशासक बन ही गए भाई।

दरअसल, श्याम लाल को पता चल गया था की किस तरह सोहन लाल ने अचानक घटना के एक दिन पहले कुछ प्रमुख मीडियाबालों को गाँव में कुछ अनहोनी होने का संकेत दे दिया था और कवरेज के लिए कुछ पैसे भी दे दिया था, जिस कारण गाँव की घटना को पहले दिन ही मीडिया ने हाथोंहाथ लिया, और वो बात भी कि भवन को किसने उड़ाया, वैसे वो काम जो समाज के भलाई के लिए हो वो गलत नहीं हो सकता।

समय बीता, अब गाँव में नया शिक्षा का मंदिर था, सभी शिक्षक गाँव में उपस्थित थे, बच्चों को शिक्षा का सही माहोल मिल रहा था, सरकार द्वारा स्कूल में पढाई के सभी अत्याधुनिक उपकरण दिए गए थे, आखिर मॉडल स्कूल बन गया था, पर एक आदमी था जो अब भी असमंजस में था, वो था मोहन बाबू, आज फिर मोहन बाबू श्याम लाल से फिर पूछते है, अरे अब तो बताओ मुझे क्या करना है, सोहन लाल बोलते हैं, बस सबके हिस्से के 500 रुपये छोड़ने पड़ेंगे ,अब सब शिक्षक ~~अब~~ यहाँ पढाएंगे। मोहन बाबू मुस्कुराते हुए बोला, वैसे भी मै तो अब रिटायर होने वाला हूँ, अंत में ही सही, कुछ दिन मै भी बच्चो को मन से पढ़ाना चाहता हूँ, आज उसके आँखों में आंसू थे और वह सोहन लाल को गले लगाकर रोने लगा, पर ये खुशी के आंसू थे। धीरे- धीरे सभी शिक्षक भी अपनी करनी पर शर्मिन्दा थे और सब अब गाँव में रहकर पढ़ाना चाह रहे थे।

आज भी गाँव के लोगों को यह पता नहीं चला कि धमाका किया किसने, वैसे ये जगजाहिर बात है की हम उस हर चीज को मान लेते हैं जो उस परिवेश में सच प्रतीत होती है, चाहे वो सही हो या नहीं, जैसे झारखंड का विहड़ गाँव है तो धमाका नक्सलियों ने ही किया होगा, वैसे किसने किया नहीं पता। रख रखाव पर खर्च हो रहा है तो स्कूल रहा ही होगा।

ये थी अपने सोहन लाल-एक शिक्षक की कहानी।

अस्वीकरण: कहानी के सभी पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं और किसी भी वास्तविक व्यक्ति या घटना से समानता केवल एक संयोग है।

****

"हिंदी हमारी सोच और संस्कार की धरोहर है।"

"हिंदी दिवस हमें मातृभाषा की शक्ति याद दिलाता है।"

भारत का इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर रुख

रश्मि महावर
पत्नी श्री शीतल दास महावर
वरि.लेखापरीक्षक

विश्व का तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल बाज़ार भारत वैश्विक ऑटोमोटिव क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो इसके सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 7% का योगदान देता है। इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) की ओर संक्रमण इस परिदृश्य को तेज़ी से बदल रहा है, क्योंकि वैश्विक रुझान स्वच्छ और हरित परिवहन की ओर बढ़ रहे हैं। वर्ष 2024 में, भारत की कुल वाहन बिक्री में इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) का योगदान 7.5% था, जिनमें से 60% हिस्सेदारी इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की रही। फेम योजना और उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) योजना जैसी सरकारी पहलों एवं बैटरी निर्माण में तकनीकी सफलताओं के साथ, भारत का लक्ष्य महत्त्वाकांक्षी इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) अंगीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करना है, जिससे उसकी गतिशीलता का भविष्य बदल जाएगा।

भारत में इलेक्ट्रिक वाहन अंगीकरण की वर्तमान स्थिति क्या है?

भारत का बढ़ता EV बाज़ार: भारत का इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) बाज़ार सत्र 2024-25 में 7.5% की सुगम्यता तक पहुँच गया, जो उपभोक्ता जागरूकता और सरकारी प्रोत्साहनों में वृद्धि से प्रेरित है।

इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन अग्रणी: इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) बाज़ार का 60% हिस्सा बनाते हैं, जो उनकी सामर्थ्य और **शहरी गतिशीलता** के आकर्षण को दर्शाता है।

✦ **सार्वजनिक परिवहन में EV वृद्धि:** सार्वजनिक परिवहन विद्युतीकरण एक प्रमुख ध्यान है, सरकार वर्ष 2026 तक 14,000 ई-बसों की योजना बना रही है।

✦ **नीतिगत समर्थन से EV अंगीकरण में तेज़ी:** सरकार की 10,000 करोड़ रुपए के बजट वाली FAME II योजना ने सभी क्षेत्रों में EV अंगीकरण में तेज़ी ला दी है।

बैटरी विनिर्माण में तकनीकी प्रगति: भारत घरेलू बैटरी विनिर्माण, विशेष रूप से लिथियम आयरन फॉस्फेट (LFP) बैटरियों में निवेश कर रहा है।

वर्ष 2030 के लक्ष्य: भारत का लक्ष्य वर्ष 2030 तक दोपहिया और तिपहिया वाहनों में 80%, बसों में 40% एवं निजी कारों में 30% EV का अंगीकरण करना है।

भारत में इलेक्ट्रिक वाहन अंगीकरण में बाधा डालने वाली चुनौतियाँ क्या हैं?

✦ **EV की उच्च प्रारंभिक लागत:** EV की उच्च प्रारंभिक लागत, जो आमतौर पर आंतरिक दहन इंजन (ICE) वाहनों की तुलना में 20-30% अधिक होती है, एक महत्त्वपूर्ण बाधा बनी हुई है।

✦ **अपर्याप्त चार्जिंग स्टेशन:** भारत में प्रति 135 EV पर केवल एक सार्वजनिक चार्जिंग स्टेशन है, जो कि प्रत्येक 6-20 EV पर एक स्टेशन के वैश्विक औसत से काफी कम है।

✦ **आयातित बैटरियों पर निर्भरता:** भारत अपनी 90% से अधिक लिथियम-आयन बैटरियों का आयात करता है, जिससे EV क्षेत्र वैश्विक आपूर्ति शृंखला व्यवधानों के प्रति संवेदनशील हो जाता है।

✦ **विनियामक और नीतिगत अनिश्चितता:** आयात शुल्क में छूट और कर व्यवस्था में परिवर्तन जैसी बदलती नीतियाँ निर्माताओं एवं उपभोक्ताओं दोनों के लिये अनिश्चितता उत्पन्न करती हैं।

✦ **रेंज चिंता और बैटरी जीवन:** उपभोक्ता EV की सीमित रेंज के बारे में चिंतित हैं, जिसके कारण 'रेंज चिंता' उत्पन्न होती है।

कम उपभोक्ता जागरूकता और वित्तीय बाधाएँ: EV लाभों और प्रौद्योगिकी के बारे में कम उपभोक्ता जागरूकता व्यापक रूप से अंगीकरण में बाधा डालती है।

भारत में इलेक्ट्रिक वाहन अंगीकरण को बढ़ावा देने के लिये क्या कदम उठाए गए हैं?

पी एम ई -ड्राइव योजना: पीएम इलेक्ट्रिक ड्राइव रिवोल्यूशन इन इनोवेटिव व्हीकल एन्हाँसमेंट (PM E-DRIVE) योजना का उद्देश्य दो वर्षों (सत्र 2024-2026) में 10,900 करोड़ रुपए के परिव्यय के साथ भारत में हरित गतिशीलता और EV पारिस्थितिकी तंत्र के विकास को गति प्रदान करना है।

✦ **चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश:** भारत PM E-DRIVE योजना के तहत अपने EV चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास में तेज़ी ला रहा है, जिसमें देश भर में 72,000 चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने के लिये 2,000 करोड़ रुपए का आवंटन किया गया है।

✦ **ई-वाहन नीति:** केंद्र सरकार ने भारत को इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) के विनिर्माण गंतव्य के रूप में बढ़ावा देने के लिये एक नई नीति (वर्ष 2024) को स्वीकृति दी है, जिसमें न्यूनतम निवेश आवश्यकता 4,150 करोड़ रुपए है और अधिकतम निवेश पर कोई सीमा नहीं है।

सरकारी प्रोत्साहन: सरकार ने इलेक्ट्रिक वाहन अंगीकरण को प्रोत्साहित करने के लिये 10,000 करोड़ रुपए के बजट के साथ FAME II योजना जैसी प्रमुख पहल शुरू की थी।

✦ **घरेलू बैटरी विनिर्माण के लिये समर्थन**: PLI योजना के माध्यम से, सरकार घरेलू बैटरी विनिर्माण को बढ़ावा दे रही है, जिसमें उन्नत रसायन सेल (ACC) के लिये 18,100 करोड़ रुपए आवंटित किये गए हैं।

स्थानीय विनिर्माण के लिये नीतिगत सुधार: इलेक्ट्रिक पैसेंजर कारों के विनिर्माण को बढ़ावा देने की योजना (SPMEPCI) आयात शुल्क में कमी की पेशकश करती है और वैश्विक EV निर्माताओं को भारत में उत्पादन स्थापित करने के लिये प्रोत्साहित करती है।

✦ **अन्य पहल:**

o **इलेक्ट्रिक मोबिलिटी प्रमोशन स्कीम:** इस योजना का उद्देश्य इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) के अंगीकरण और विनिर्माण के लिये प्रोत्साहन देकर उन्हें बढ़ावा देना है।

EV और चार्जिंग उपकरणों पर GST घटाकर 5% किया गया: EV और चार्जिंग उपकरणों पर वस्तु एवं सेवा कर (GST) को घटाकर 5% करने का उद्देश्य उपभोक्ताओं के लिये EV को अधिक किफायती बनाना है।

भारत के EV क्षेत्र के लिये आगे की राह क्या है?

✦ **बैटरी उत्पादन में तीव्रता:** भारत को इलेक्ट्रिक वाहनों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिये घरेलू बैटरी उत्पादन को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये।

✦ **चार्जिंग अवसंरचना का विस्तार:** EV अंगीकरण में तेज़ी लाने के लिये चार्जिंग अवसंरचना का विस्तार करना महत्त्वपूर्ण है।

✦ **हाइब्रिड वित्तपोषण मॉडल:** चार्जिंग स्टेशनों के निर्माण की पूंजी-गहन प्रकृति के प्रबंधन करने के लिये, भारत ग्रीन बॉण्ड, कम ब्याज दरों वाले ऋण और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग जैसे नवीन वित्तपोषण मॉडल का पता लगा सकता है।

✦ **केंद्र और राज्य स्तरीय नीतियों में सामंजस्य:** भारत के EV क्षेत्र के विकास को दिशा देने के लिये एक स्थिर, **दीर्घकालिक नीति कार्यढाँचे की आवश्यकता** है।

✦ **अनुसंधान एवं विकास पर ध्यान केंद्रित करना:** भारत को EV प्रौद्योगिकियों की वर्तमान सीमाओं पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिये अनुसंधान एवं विकास में निवेश करना चाहिये।

हाइड्रोजन ईंधन सेल इलेक्ट्रिक वाहन: राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन को एकीकृत करने से भारत में एक स्थायी हाइड्रोजन पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण को गति मिल सकती है, जो हरित हाइड्रोजन उत्पादन बढ़ाने और ईंधन भरने के बुनियादी अवसंरचना के विस्तार पर ध्यान केंद्रित करेगा।

बाज़ार खंडों और उपयोग के मामलों पर ध्यान केंद्रित करना: बसों, टैक्सियों और अंतिम बिंदु वितरण वाहनों को प्राथमिकता देकर सार्वजनिक एवं वाणिज्यिक वस्तु परिवहनों का विद्युतीकरण करना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि उनकी उपयोग दर उच्च है तथा उत्सर्जन पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

नवोन्मेषी नीतियों, तकनीकी प्रगति और बढ़ती उपभोक्ता जागरूकता से प्रेरित भारत की इलेक्ट्रिक वाहन यात्रा, इसके ऑटोमोटिव परिदृश्य को नया आकार देने के लिये तैयार है। बुनियादी अवसंरचना के विकास, घरेलू बैटरी निर्माण और मज़बूत नीतिगत समर्थन पर निरंतर ध्यान केंद्रित करते हुए, भारत अपने महत्त्वाकांक्षी इलेक्ट्रिक वाहन अंगीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये तैयार है। यह परिवर्तन सतत् विकास को बढ़ावा देगा, ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ावा देगा और वैश्विक जलवायु लक्ष्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान देगा।

****

"हिंदी को सम्मान दो, ताकि आने वाली पीढ़ियां इसे गौरव से अपनाएं।"

भारत के उच्च शिक्षा मॉडल पर पुनर्विचार

दीपक
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली एक निर्णायक मोड़ पर खड़ी है, जहाँ उसे अकादमिक अनुशासन के क्षय, सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण की कमी और बढ़ती व्यावसायिकीकरण की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। पहले यह व्यवस्था सुदृढ़ बुनियादी सिद्धांतों और निर्देशित मेंटॉरशिप पर आधारित थी, पर आज अनेक संस्थान गुणवत्ता एवं उद्देश्य की जगह रैंकिंग व राजस्व को प्राथमिकता देने लगे हैं। हालाँकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 एक प्रगतिशील ढाँचा प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका असमान कार्यान्वयन चिंताएँ उत्पन्न करता है। इस क्षेत्र को पुनर्जीवित करने के लिये एक रणनीतिक पुनर्निर्देशन आवश्यक है, जो आधारभूत उत्कृष्टता, नैतिक नेतृत्व और संस्थागत सत्यनिष्ठा पर आधारित हो।

भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली में प्रमुख विकास क्या हैं?

राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालयों (SPU) का विस्तार और समावेशी अभिगम: उच्च शिक्षा नेटवर्क के विस्तार के प्रति भारत की प्रतिबद्धता राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालयों (SPU) के विकास के माध्यम से महत्त्वपूर्ण रूप से प्रदर्शित हुई है, जो शिक्षा को अधिक सुलभ बनाने के लिये केंद्रीय बन गए हैं, विशेष रूप से वंचित और ग्रामीण क्षेत्रों में।

ये विश्वविद्यालय अब 3.25 करोड़ से अधिक छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, जो एक समावेशी दृष्टिकोण को दर्शाता है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020 के वर्ष 2035 तक नामांकन को दोगुना करने के महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य के अनुरूप है।

✦ **अंतर्राष्ट्रीयकरण और वैश्विक सहयोग:** भारत अपनी उच्च शिक्षा प्रणाली के अंतर्राष्ट्रीयकरण की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रगति कर रहा है, जैसा कि इंस्टीट्यूट्स ऑफ एमिनेंस योजना जैसी पहलों से स्पष्ट है, जो चुनिंदा संस्थानों को अधिक स्वायत्तता और वित्त पोषण प्रदान करती है।

o इस पहल का उद्देश्य भारतीय विश्वविद्यालयों को वैश्विक अभिजात वर्ग में लाना है, जिससे उनकी रैंकिंग बढ़ेगी और शैक्षणिक सहयोग बढ़ेगा।

o इसके अतिरिक्त, संकाय साझाकरण, संयुक्त अनुसंधान कार्यक्रमों और छात्र सहयोग के माध्यम से अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ भारत की बढ़ती साझेदारियाँ, सीमा पार ज्ञान-साझाकरण के माहौल को बढ़ावा दे रही हैं।

डिजिटलीकरण और ऑनलाइन शिक्षा: DIKSHA(नॉलेज इनफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग) और राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी जैसी पहलों से प्रेरित डिजिटल शिक्षा में वृद्धि, भारत की उच्च शिक्षा में एक महत्त्वपूर्ण विकास का प्रतीक है।

o लैंगिक समानता और समावेशिता में प्रगति: भारत ने उच्च शिक्षा में लैंगिक समानता प्राप्त करने में उल्लेखनीय प्रगति की है, लैंगिक समानता सूचकांक (GPI) 2011-12 में 0.87 से बढ़कर सत्र 2021-22 में 1.01 हो गया है।

निजी विश्वविद्यालयों में वृद्धि: भारत में निजी विश्वविद्यालयों में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है, सत्र 2011-12 और 2021-22 के दौरान नामांकन में 497% की वृद्धि हुई है।

भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली से जुड़े प्रमुख मुद्दे क्या हैं?

✦ **विस्तार में गुणवत्ता बनाम मात्रा की दुविधा:** भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली का तेज़ी से विस्तार हुआ है, लेकिन यह प्रायः गुणवत्ता की कीमत पर हुआ है।

✦ **संकाय की कमी और अपर्याप्त व्यावसायिक विकास:** भारत में अधिकांश शैक्षणिक संस्थानों में संकाय की भारी कमी बनी हुई है, जिससे शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता में बाधा आ रही है।

✦ **अभिगम में असमानता और क्षेत्रीय असमानताएँ:** भारत में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा तक अभिगम असमान बनी हुई है तथा क्षेत्रीय और सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ भी बहुत अधिक हैं।

✦ **पुराना पाठ्यक्रम और उद्योग के साथ तालमेल का अभाव:** भारत के उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम की प्रायः यह कहकर आलोचना की जाती है कि यह पुराना है और तेज़ी से विकसित हो रहे रोज़गार बाज़ार के साथ संगत नहीं है।

✦ **अनुसंधान में अंतराल और नवाचार का अभाव:** भारत ने अनुसंधान उत्पादन में प्रगति की है, लेकिन अनुसंधान की गुणवत्ता और नवाचार के मामले में देश अभी भी वैश्विक मानकों से पीछे है।

✦ **प्रशासनिक हस्तक्षेप और शासन संबंधी मुद्दे:** अत्यधिक सरकारी नियंत्रण और प्रशासनिक हस्तक्षेप ने भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों की स्वायत्तता को कमज़ोर कर दिया है।

अपर्याप्त अंतर्राष्ट्रीयकरण और प्रतिभा का बहिर्गमन: भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली को अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने में संघर्ष करना पड़ा है।

उच्च शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने के लिये भारत क्या उपाय अपना सकता है?

✦ **संकाय भर्ती और विकास कार्यक्रमों को मज़बूत करना:** भारत को सभी विश्वविद्यालयों और संस्थानों में उच्च गुणवत्ता वाले संकाय की भर्ती को प्राथमिकता देनी चाहिये।

✦ **अनुसंधान-संचालित शिक्षा और वित्तपोषण को बढ़ावा देना:** सरकार को विश्वविद्यालयों में अनुसंधान और विकास में निवेश बढ़ाना चाहिये तथा अनुदान प्रदान करना चाहिये, जिससे संकाय व छात्रों को नवीन एवं प्रभावशाली अनुसंधान में संलग्न होने के लिये प्रोत्साहित किया जा सके।

✦ **डिजिटल अवसंरचना और हाइब्रिड लर्निंग मॉडल को बढ़ाना:** डिजिटल युग की मांगों को पूरा करने के लिये, विश्वविद्यालयों को अत्याधुनिक डिजिटल अवसंरचना में निवेश करना चाहिये जो ऑनलाइन शिक्षण, अनुसंधान और सहयोग का समर्थन करता हो।

✦ **वैश्विक सहयोग और अंतर्राष्ट्रीयकरण को प्रोत्साहित करना:** भारत को शीर्ष वैश्विक विश्वविद्यालयों के साथ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना चाहिये, जिससे ड्यूअल डिग्री प्रोग्राम, संकाय विनिमय पहल और अनुसंधान साझेदारी की अनुमति मिल सके।

उद्यमशीलता की मानसिकता और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना: उच्च शिक्षा संस्थानों में उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने वाले पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करने से छात्रों को अपने विचारों को स्टार्टअप में बदलने में सहायता मिल सकती है।

✦

वित्तीय सहायता और किफायती शिक्षा मॉडल का विस्तार: उच्च शिक्षा की उच्च लागत को समायोजित करना समाज के सभी वर्गों के लिये अभिगम सुनिश्चित करने के लिये महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

भारत के उच्च शिक्षा परिदृश्य को सही मायने में बदलने के लिये, सुधारों को विस्तार से आगे बढ़कर गुणवत्ता, समावेशिता और प्रासंगिकता पर केंद्रित होना चाहिये। जैसा कि कोठारी आयोग ने उचित ही बल दिया था, *"शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम होना चाहिये।"*

कुशल संकाय, उत्कृष्ट शोध, उद्योग संबंधों और एथिकल गवर्नेंस के माध्यम से इस दृष्टिकोण को पुनर्जीवित करने से यह सुनिश्चित होगा कि उच्च शिक्षा राष्ट्रीय प्रगति एवं वैश्विक प्रतिस्पर्द्धा का वाहक बने।

"भाषा किसी राष्ट्र का मानदंड होती है।" - गांधीजी

"हिंदी हमारी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा है।" - राजेंद्र प्रसाद

साहित्य और समाज

अंजित कुमार
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

साहित्य कल्पनाशील, कलात्मक या बौद्धिक मूल्यों का प्रतिबिंब है। साहित्य समाज के मूल्यों को प्रदर्शित करता है। और समाज किस दिशा में जा रहा है और किस दिशा मे नहीं गया है जहाँ जाना चाहिए ये सब समझाने का एक सरल प्रयास साहित्य करता है। तभी तो साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है।

प्राचीन रोमन साहित्य, यूनानी साहित्य और मेसोपोटामिया का साहित्य इनके कुछ उदाहरण है जिसका अवलोकन आज भी किया जा सकता है। साहित्य की अनेक विधा है जैसे- काव्य, गद्य, पद्य, लघुकथा, नाटक, कथा इत्यादि।

इतिहास गवाह है साहित्य ने क्रांति भी की है और विजय भी प्राप्त की है। साहित्य मौन रूप से समाज में अलख जगाने का प्रयास सतत् रूप से आज भी कर रहा है। आज भी समाज को दिशा दे रहा है। समाज को रास्ता दिखा कर आगे ले जाने का प्रयास कर रहा है।

साहित्य की सुंदरता यह है कि यह मानव आत्मा का प्रतिबिंब है। साहित्य की बातें आत्मा से निकलती है। तात्पर्य यह है कि साहित्य का संबंध परमात्मा से है।

साहित्य मनोरंजन ही नहीं आत्मा को विभोर करने वाली, सुख दुख का टोट लेने वाली, सरसता प्रदान करने वाली, सकारात्मक उर्जा की भांति है।

"शेकस्पीयर " के शब्दों में- "साहित्य किसी राष्ट्र के बौद्धिक जीवन का व्यापक सार है।"

हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय की पंक्तियाँ याद आती हैं---

किसी का सत्य था
मैनें संदर्भ मे जोड़ दिया।
कोई मधुकोष काट लाया था,
मैंने निचोड़ लिया,
लो मैं कवि हूँ आधुनिक हूँ, नया हूँ
काव्य-तत्व की खोज में कहाँ नहीं गया हूँ?
चाहता हुँ आज मुझे
एक-एक शब्द पर सराहते हुए पड़े।

साहित्य का अविर्भाव भी इसी समाज से होता है। समाज का प्रतिबिंब होता है - 'साहित्य'। समाज में घटित होने वाली दैनिक जीवन की हर घटना को साहित्य मे देखा जा सकता है। सामाजिक बुराईयों की अदभूत क्रहकला देखी जा सकती है साहित्य में।

प्रेमचंद का साहित्य उठाकर कोई देखे तो पता चलेगा समाज मे कैसी स्थिति थी उस समय। गरीबी, सूदखोरी सभी का उदाहरण मिलेगा।

साहित्य वह सशक्त माध्यम है जो समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करता है। समाज मे घटित होने वाली हर घटना साहित्य का हिस्सा बन जाती है। साहित्य की खासियत यही है कि यह अतीत से प्रेरणा लेती है, वर्तमान में जीती है और भविष्य का पथ प्रदर्शन करती है।

साहित्य और समाज ये दो शब्द एक दूसरे के पूरक है। इन दोनों की कल्पना अलग-अलग की ही नहीं जा सकती है। साहित्य समाज के उन अनछूए पहलुओं पर रोशनी डालता है जहाँ एक आम आदमी जा भी नहीं सकता है। साहित्य समाज के मार्मिक अनछुए सच्चाईयों को जाहिर करने का और सामने लाने का यथोचित प्रयास करता है। समाज में रहकर हीं सामाजिक मूल्यों को समझा और परखा जा सकता है। समाज से बाहर जाकर कभी भी इन मूल्यों को अनुवाद नहीं किया जा सकता है।

खूबसूरत पंक्तियों को उद्‌यत करना उचित प्रतीत होता हैः-

साहित्य समाज का दर्पण है
जिंदगी की हर पक्षों पर अर्पण हैं
कुछ अनसुलझे पहलूओं के राज
खोलता है समाज मे जो देखता है वही बोलता है,
कश्मकश की सुलझाता अड़चन हैं,
साहित्य समाज का दर्पण है।

समाज के स्वरूप से हीं तो साहित्य के स्वरूप का निर्धारण होता है। समाज मे अगर निराशा व्याप्त है तो साहित्य में भी निराशा झलकती है, दर्पण में वहीं प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है जो उसके सामने रख दिया जाता है। ठीक उसी प्रकार साहित्य मे भी तत्कालीन समाज की ही प्रतिबिंब दिखाई देता है। समाज से दूर होकर कभी-भी उनकी सच्चाईयों से रूबरू नहीं हुआ जा सकता है। समाज की सच्चाईयों को उकेरने के लिए उस व्यवस्था का हिस्सा बनना पड़ता है ताकि उसे महसूस किया जा सके। साहित्य समाज का दर्पण होता है। इनका संबंध अटूट है उदाहरण के तौर पर, प्रेमचंद के गोदान में ग्रामीण किसान छोटी की व्यथा-कथा पढ़कर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि तत्कालीन जमींदारी प्रथा में किसानों का शोषण किस तरह होता था। साहित्य जनता की चित्तवृति का प्रतिबिंब है। जनता की अनेक आकाँक्षाएं, चिंतन-मनन, विचार-तर्क सब कुछ साहित्य मे देखें जा सकते है। एक सुंदर उक्ति हैः-

“ अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नही है
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।“

साहित्य किसी समाज की सांस्कृतिक विरासत के रूप मे काम करती है। यह सुनिश्चित करता है कि आनेवाली पीढ़ीयाँ अपनी जड़ों से जुड़ सकें और अतीत के अनुभवों से सीख सकें।

लेखक समाज का ही व्यक्ति होता है जो अपनी सुदृढ़ सोच और लेखनीं से समाज को दिशा देता है। सकारात्मक बदलाव को बढ़ावा देता है। साहित्य मानव स्वभाव और परिस्थितियों को समझने में मदद करता है। आधुनिक समाज मे साहित्य के महत्व को कमतर आँकने की भूल नहीं की जा सकती। साहित्य कल्पनात्मक भी है और गैरकल्पनात्मक भी। दोनों का आधार समाज हीं है।

इसलिए समाज को समझना साहित्य रचना के लिए जरूरी है। इसे बेहत्तर प्रभावित करने के लिए समाज में रहना जरूरी है। इसलिए समाज और साहित्य को जोड़कर देखा जाना चाहिए। दोनों पूरक हैं।

समाज निर्माण एवं साहित्य निर्माण का कार्य समाज में रहकर हीं किया जा सकता है। समाज के दर्द, सच्चाईयों एवं संघर्षों को समझने, टटोलने और दूर करने का सफल प्रयास साहित्य ही करता है। साहित्य की अवहेलना करना किसी भी सभ्य समाज के लिए भारी पड़ सकता है।

प्रेमचंद के शब्दों को बताना यहाँ उचित प्रतीत होता है–

जो दलित है, पीड़ित है, संत्रस्त है, उसकी साहित्य के माध्यम से हिमायत करना साहित्यकार का नैतिक दायित्व है।

19वीं एवं 20वीं शताब्दी को भारतीय साहित्य के साहित्यिक एवं समाज निर्माण की शताब्दी कहा जा सकता है।

साहित्य मानव को ज्येष्ठ बनाने का संकल्प लेकर चला है। हालाकि बाजारवादी प्रवृतियों के कारण साहित्यिक मूल्यों में गिरावट आई है परंतु अभी भी स्थिति नियंत्रण में है।

साहित्य जीवन के सत्य को प्रकट करने वाले विचारों और भावों की सुंदर अभिव्यक्ति है। शब्दों की ऐसी श्रृंखला जिसमें सार्वजनिक सौंदर्य के फूल खिलें और खुशबू बिखेरे और उसी श्रृंखला मे ऐसे फल उपजें जिनका स्वरूप सबको मिल सके, सबके लिए हितकारी हो। साहित्य की प्रासंगिकता समाज के लिए इसी बात में दिखती है कि ये "सर्वजन हिताय" और "समावेशी विकास" के लिए बात करती है जो आज की जरूरत है और उद्देश्य भी।

****

"हिंदी हमारी भावनाओं की सच्ची अभिव्यक्ति है।"

"हिंदी केवल भाषा नहीं, यह हमारी पहचान है।"

युद्ध और शांति

गजराज सिंह नेगी
लेखापरीक्षक

मानव इतिहास में युद्ध और शांति दो ऐसे महत्वपूर्ण और विरोधाभासी पहलू हैं, जिनका प्रभाव केवल देशों तक सीमित नहीं रहता बल्कि पूरी मानवता पर गहरा असर डालता है। युद्ध के कारण विनाश, असहिष्णुता, और सामाजिक-आर्थिक तबाही होती है, वहीं शांति समृद्धि, विकास और भाईचारे की नींव रखती है। आज की दुनिया में कई क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ लंबे समय से युद्ध और संघर्ष चल रहे हैं। भारत-पाकिस्तान, इज़राइल-ईरान, और रूस-यूक्रेन के बीच के विवाद विश्व शांति के लिए गंभीर खतरा बने हुए हैं। इन संघर्षों के संदर्भ में युद्ध और शांति का महत्व समझना जरूरी है।

<u>भारत-पाकिस्तान विवाद और पाकिस्तानी आतंकवाद</u>

भारत और पाकिस्तान के बीच का विवाद विशेष रूप से कश्मीर क्षेत्र को लेकर वर्षों से बना हुआ है। विभाजन के बाद से ही दोनों देशों के बीच कई युद्ध हो चुके हैं, लेकिन 1990 के दशक से पाकिस्तान की ओर से भारत में आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा देना इस संघर्ष का एक गंभीर पहलू बन गया है। पाकिस्तान में कुछ संगठन सक्रिय रूप से भारत के अंदर हिंसा फैलाने और कश्मीर में अलगाववाद को प्रोत्साहित करने के लिए आतंकवाद को समर्थन देते हैं।

पाकिस्तान सरकार और सेना पर कई बार आरोप लगे हैं कि वे इन आतंकवादी समूहों को छुपाती हैं, उन्हें वित्तीय और सैन्य सहायता प्रदान करती हैं। 2008 में मुंबई हमले जैसे भयावह आतंकवादी हमलों ने इस मुद्दे को विश्व पटल पर प्रमुखता से उभारा। यह आतंकवाद न केवल भारतीय नागरिकों की जान लेने वाला काला दुष्प्रभाव है, बल्कि यह पूरे क्षेत्र की शांति और सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा है।

पाकिस्तानी आतंकवाद के कारण भारत-पाकिस्तान के बीच विश्वास का अभाव गहरा हुआ है, और इसी वजह से शांति प्रक्रिया में बाधाएं आई हैं। इस परिस्थिति को सुलझाने के लिए पाकिस्तान को आतंकवादी समूहों के खिलाफ ठोस कार्रवाई करनी होगी, तभी दक्षिण एशिया में स्थायी शांति संभव होगी।

<u>इज़राइल और ईरान का मध्य पूर्व संकट</u>

मध्य पूर्व का क्षेत्र लंबे समय से विश्व के सबसे अशांत इलाकों में से एक रहा है। खासकर इज़राइल और ईरान के बीच तनाव और राजनीतिक टकराव गहरे हैं। यह विवाद मुख्य रूप से धार्मिक, राजनीतिक और क्षेत्रीय प्रभुत्व से जुड़ा हुआ है। इज़राइल एक यहूदी राष्ट्र है जबकि ईरान एक इस्लामी गणराज्य। दोनों के बीच के मतभेदों के कारण कई बार सैन्य संघर्ष और राजनीतिक दुश्मनी हुई है।

इस क्षेत्र में युद्ध और तनाव के कारण लाखों नागरिक बेघर हुए हैं, आर्थिक नुकसान हुआ है और मानव जीवन का मूल्य गिरा है। शांति की स्थापना के लिए दोनों देशों को चाहिए कि वे वार्ता और कूटनीति के जरिए अपने मतभेदों को दूर करें। वैश्विक समुदाय को भी इस क्षेत्र में शांति के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए ताकि पूरे मध्य पूर्व में स्थिरता आए।

रूस-यूक्रेन युद्ध और वैश्विक प्रभाव

रूस और यूक्रेन के बीच 2022 में शुरू हुआ युद्ध विश्व स्तर पर सबसे बड़ा विवाद बना हुआ है। यह केवल दो देशों का मामला नहीं रह गया, बल्कि वैश्विक राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा तंत्र को प्रभावित कर रहा है। यूक्रेन पर रूस का सैन्य आक्रमण लाखों नागरिकों के विस्थापन, मानवीय संकट और आर्थिक मंदी का कारण बना है।

इस युद्ध के कारण विश्व अर्थव्यवस्था में अस्थिरता आई है, खाद्य संकट उत्पन्न हुआ है, और ऊर्जा की कीमतें बढ़ी हैं। रूस-यूक्रेन संघर्ष ने यह स्पष्ट कर दिया है कि युद्ध केवल क्षेत्रीय विवाद तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ता है। इसलिए, अंतरराष्ट्रीय समुदाय को मिलकर इस संघर्ष को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाने के प्रयास करने होंगे।

युद्ध के दुष्परिणाम

युद्ध न केवल इंसानी जीवन के लिए खतरनाक है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी नुकसानदायक है। युद्ध में भारी संख्या में लोग मारे जाते हैं, परिवार टूट जाते हैं, और समाज में भय और असुरक्षा फैल जाती है। आर्थिक दृष्टि से युद्ध देश के संसाधनों को नष्ट कर देता है, विकास को रोकता है और गरीबी बढ़ाता है।

इसके अलावा, युद्ध के कारण पर्यावरण भी बुरी तरह प्रभावित होता है। जंगल जल जाते हैं, प्रदूषण बढ़ता है, और प्राकृतिक संसाधन नष्ट होते हैं। ये सब मिलकर मानवता के लिए विनाशकारी साबित होते हैं। इसलिए युद्ध को रोकना और शांति कायम करना मानवता की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

शांति का महत्व और उसका मार्ग

शांति वह आधार है जिस पर कोई भी देश या समाज विकास कर सकता है। शांति से ही लोग सुरक्षित, खुशहाल और स्वतंत्र जीवन जी सकते हैं। शांति के माध्यम से ही आर्थिक प्रगति, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक समृद्धि संभव होती है। भारत-पाकिस्तान, इज़राइल-ईरान, और रूस-यूक्रेन जैसे विवादों में शांति का मार्ग ही समाधान है।

शांति के लिए सबसे जरूरी है संवाद, समझदारी, और सहिष्णुता। देश अपने मतभेदों को बातचीत, कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के जरिए सुलझाएं। साथ ही, वैश्विक समुदाय को भी संघर्ष क्षेत्रों में मध्यस्थता करनी चाहिए और शांति की दिशा में प्रयास करने चाहिए।

युद्ध के बजाय विकास और सहयोग को प्राथमिकता देना चाहिए। शिक्षा, आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आपसी सम्मान से ही हम विश्व में स्थायी शांति स्थापित कर सकते हैं।

युद्ध और शांति मानव जीवन के दो पहलू हैं, लेकिन युद्ध का विनाशकारी प्रभाव हमें शांति के महत्व का एहसास कराता है। भारत-पाकिस्तान, इज़राइल-ईरान, और रूस-यूक्रेन के संघर्ष इस बात के उदाहरण हैं कि युद्ध केवल नफरत और तबाही लाता है। इन संघर्षों को सुलझाने का रास्ता केवल शांति, संवाद और समझौते से गुजरता है। हमें अपने भीतर सहिष्णुता और प्रेम को बढ़ावा देना होगा ताकि विश्व में स्थायी शांति और समृद्धि स्थापित हो सके। शांति के बिना मानव जीवन का कोई अर्थ नहीं, इसलिए हमें हमेशा शांति की राह पर चलना चाहिए।

काशी एक संस्मरण

प्रमोद कुमार राय
एम.टी.एस

सांस्कृतिक दृष्टि से भी वाराणसी प्रसिद्ध है क्योंकि यहां पर पौराणिक कथाओं पर आधारित रामलीला, कृष्णलीला मनाया जाता है यह प्रस्तुति बहुत ही सुन्दर तौर -तरीके और विषय वस्तु के साथ में प्रदर्शन की जाती है ।जैसे कि रामनगर में रामलीला मनाया जाता हैं। क्या सुंदर झांकी देखने को मिलता है। रामचरितमानस पर आधारित यह नाटक के माध्यम से दर्शाया जाता हैं। धार्मिक दृष्टि से भी यह बहुत प्रचलित है। लोकप्रिय रुप से भी इसे प्रसिद्ध इसलिए कहा गया है? क्योंकि यहां का वातावरण बहुत ही स्वच्छ और रोगमुक्त है। गंगा के किनारे ठंडी - ठंडी हवा और गंगा नदी में सुंदर - सुंदर नौकाएं जो बहुत ही अच्छी तरीके से सजी -धजी और रंगों में रंगी हुई होती है। कितना मनमोहक दृश्य लगता हैं। वाराणसी अर्थात काशी को मोक्षदायिनी के नाम से भी जाना जाता हैं।अब हम जानेंगे कि कैसे इस नगरी को मोक्षदायिनी पुरी कहां गया है। हम एक कहानी के माध्यम से काशी अथवा वाराणसी शहर के बारे में जानेंगे कि कैसे काशी को मोक्षदायिनी नाम से जाना जाता है। एक समय की बात है, वाराणसी अथवा काशी में एक अस्सी नाम की प्रसिद्ध घाट है जो बहुत ही सुन्दर और मनमोहक है। उसी घाट पर एक बहुत पुरानी शिव मंदिर है उसी मंदिर के आस -पास में एक गरीब ब्राह्मण रहते थे जो दीन -दुखी और निर्धन थे।

उनका जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ था। जन्म से तो ब्राह्मण थे लेकिन एक बहुत बड़ी समस्या यह थी कि ज्ञान अनभीग थे। ब्राह्मण तो ज्ञानी और वेद मंत्रों, ग्रन्थों से परिपूर्ण होना चाहिए जो उनमें नहीं था। ब्राह्मण देव एक पारिवारिक व्यक्ति थे। उन्हीं पर पूरा परिवार निर्भर था। परिवारिक जीवन व्यतीत करना सरल नहीं है अपने परिवार के लिए कुछ ऐसे संसाधन महत्वपूर्ण है । अगर हमें समाजिक जीवन व्यतीत करना है तो हमें हर हालत में इन संसाधनों की व्यवस्था करना ही पड़ता है। यही समस्या ब्राह्मण देव के सामने भी था। पढ़ें -लिखे तो थे नहीं जो कर्म -कांड करके अपना और अपने परिवार का भरण -पोषण कर सकें। शरीर से दुर्बल भी थे। ब्राह्मण देव के सामने परिवार के ज़िम्मेदारियों का बोझ भी था। बिना अर्थ के यह दायित्व निभाना सम्भव नहीं है। जीवकोपार्जन के लिए धन का होना बहुत ही आवश्यक होता है। और ऐसे तो धन प्राप्त होगा नहीं उसके लिए परिश्रम करना पड़ता है जो कि हम दो तरह से कर सकते है। एक तो शारीरिक श्रम से या मांनसिक श्रम से काम करके ही संसार के संसाधनों की व्यवस्था कर सकते हैं। और ब्राह्मण देव दोनों से नकारा थे। जब भी ऐसी परिस्थितियां व्यक्ति के सामने आती हैं तो नैतिक या अनैतिक दोनों में से एक को चुन ही लेता है। और ब्राह्मण देव ने भी कुछ ऐसा ही किया।

उनको उयाय सूझा कि दिन में विश्राम और रात को चोरी कर के अपना और अपने परिवार वालों का भरण पोषण किया जाये उसी दिन से उन्होंने यह करना शुरू कर दिया। दिन में मंदिर के अंदर होते थे और रात में चोरी करके कुछ धन प्राप्त कर अपना और अपने परिवार के आवश्यकता को पूरा करते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि ब्राह्मण देव मंदिर में सोते रहे और सुबह हो गया, अचानक से ब्राह्मण देव की नींद टूटी तो देखे कि सामने से अंधियारा छट रहा है और चारो ओर प्रकाश फैल रहा है।

अब ब्राह्मण देव बड़े सोच में पड़ गये कि आज के दिन मेरे परिवार का भोजन - पानी कैसे चलेगा, वह बहुत परेशान थे। कुछ समझ में नही आ रहा था। तभी उनकी नज़र मंदिर के गुब्बज पर पड़ी, उन्होंने देखा कि एक पीतल की घंटी उससे लटक रही है। ब्राह्मण देव इस दृश्य को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। चलो आज का काम तो इससे चल जाएगा। चलो इसे उतार लेते हैं और बाजार में बेचने पर कुछ धन मिल जायेंगे।

और आज का खान-पान काम चल जाएगा। घंटी उतारने के लिए कोशिश करने लगे, लेकिन दिक्कत ये थी कि घंटी ब्राह्मण देव के हाथ के पहुंच से ऊपर थी। वहां तक हांथ पहुंच नहीं पा रहा था। अब करें तो क्या करें? तभी उनकी नज़र नीचे पड़ी तो देखा कि एक काली ऊंची पिंडी जैसी वस्तु है तब ब्राह्मण देव के दिमाग में यह विचार आया कि क्यों न इस पर पांव रख कर घंटी उतार लूं? और ब्राह्मण देव ने ऐसा ही किया। उस पिंडी पर दोनों पांव रख कर घंटी को उतारने का प्रयास कर ही रहे थे कि अचानक से सामने कोई प्रकट हो गया और बोला,हे ब्राह्मण देव आप ऐसा क्यों कर रहे हैं तब ब्राह्मण देव बोला, हे भाई! ऐसा मैं इसलिए कर रहा हूं। क्योंकि आज के दिन मेरा पूरा परिवार भूखा न रह जाए। हे भाई! यही मेरा पेशा है। चोरी करके जो धन प्राप्त करता हूं। उससे अपना और अपने परिवार का खर्चा चलाता हूं। भाई साहब! अब आप आ गये तो ये भी सम्भव नहीं है। लगता है आज का दिन मैं और मुझे और मेरे को परिवार भूखा ही रहना पड़ेगा भाई!

यह बात सुनकर महादेव को बहुत दुख हुआ और बोलें, हे ब्राह्मण देव जिस पर आप खड़े हो वह मेरा ही प्रतीक मैं इस नगरी का राजा हूं। मैं देवों का देव हूं। यह नगर मेरे नाम से मशहूर है।

एक भक्त रावण था जिसने एक सिर चढ़ाकर कर प्रसन्न किया था।

आज आप ने पूरा शरीर चढ़ाकर मुझे प्रसन्न कर दिया है। हे ब्राह्मण देव! आज मैं वरदान देता हूं कि जो भी दर्शनार्थी, श्रद्धालु, भक्त तेरी काशी में आयेंगे। वह भूखा नहीं रहेगा। हे ब्राह्मण देव! अब आप को अपना लोक प्रदान करता हूं। यह बात कहकर बाबा अंतर्ध्यान हो गये।

इस लिए हिन्दु धर्म में काशी को मोक्षदायिनी के नाम से प्रसिद्ध माना गया है।

निष्कर्ष _

यह प्रकरण पूरी -तरह से पौराणिक कथाओं और दन्तकथाओं, जनश्रुतियों पर आधारित है ऐसा कहा जाता हैं कि ऐसी कहानियां अक्सर जनमानस या जनश्रुतियों पर आधारित होती हैं।

बम बम भोले,हर हर महादेव।

भारत में युवा बेरोजगारी की स्थिति

– आकांक्षाओं और अवसरों के बीच की खाई

सिन्द्बाज कुरैशी
डाटा एंन्ट्री ऑपरेटर

प्रस्तावना

भारत को विश्व का सबसे युवा देश कहा जाता है। 65% से अधिक आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। यह आंकड़ा हमें 'जनसांख्यिकीय लाभांश' की उम्मीद देता है, लेकिन जब यही युवा वर्ग **बेरोज़गारी** का शिकार होता है, तब यही लाभांश हमारे लिए एक चुनौती बन जाता है।

आज भारत जिस आर्थिक और सामाजिक बदलाव के दौर से गुजर रहा है, उसमें **युवा बेरोजगारी** एक गंभीर संकट के रूप में उभर कर सामने आई है। शिक्षा पूरी करने के बावजूद जब युवाओं को उनके लायक काम नहीं मिलता, तो उनकी उम्मीदें टूटती हैं और समाज में हताशा फैलती है।

वर्तमान स्थिति का चित्रण

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) और विभिन्न सर्वेक्षणों के अनुसार, **भारत में 15-29 आयु वर्ग के युवाओं में बेरोजगारी दर 17% से अधिक** है, जो वैश्विक औसत से कहीं अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी युवाओं में यह समस्या अधिक तीव्र है।

यह विडंबना है कि एक ओर देश में तकनीक और नवाचार की लहर चल रही है, तो दूसरी ओर लाखों शिक्षित युवा नौकरी की तलाश में दर-दर भटक रहे हैं।

युवा बेरोजगारी के प्रमुख कारण

1. **शिक्षा और उद्योग के बीच असंतुलन** शिक्षा प्रणाली युवाओं को व्यावहारिक कौशल देने में विफल रही है। डिग्रियां हैं, लेकिन काम करने की योग्यता नहीं।
2. **सरकारी नौकरियों की सीमित संख्या** एक सरकारी पद के लिए लाखों आवेदन आते हैं। भर्ती प्रक्रियाएं लंबी और अनिश्चित होती हैं।
3. **निजी क्षेत्र में अनुभव की मांग** कंपनियाँ अनुभवी उम्मीदवारों को प्राथमिकता देती हैं, जिससे नए स्नातकों को मौका नहीं मिल पाता।
4. **तकनीकी बदलाव और ऑटोमेशन** कई परंपरागत नौकरियाँ अब मशीनों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से बदल दी गई हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी छोटे शहरों और गाँवों में उद्योगों का अभाव है, जिससे वहाँ के युवाओं को रोजगार के लिए पलायन करना पड़ता है।

युवाओं पर इसका प्रभाव

- **मानसिक तनाव और अवसाद में वृद्धि**
- **सामाजिक असंतोष और क्रोध**
- **अपराध की प्रवृत्ति में इज़ाफा**

देश से प्रतिभाओं का पलायन (Brain Drain)

समाधान की संभावनाएँ

1. **शिक्षा में सुधार और कौशल विकास** शिक्षा को व्यावसायिक और नौकरी के अनुकूल बनाना होगा। **Skill India**, **PMKVY** जैसी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन ज़रूरी है।
2. **स्टार्टअप और स्वरोज़गार को बढ़ावा** सरकार को युवाओं को वित्तीय सहायता और मार्गदर्शन देना चाहिए ताकि वे खुद का व्यवसाय शुरू कर सकें।
3. **स्थानीय उद्योगों और MSMEs को सहयोग** छोटे और मध्यम उद्योगों को सशक्त कर के स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं।

सरकारी व निजी क्षेत्र की साझेदारी इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप और ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग जैसे कार्यक्रम युवाओं को रोजगार के लिए तैयार कर सकते हैं।

निष्कर्ष

भारत के लिए युवा केवल संख्या नहीं, बल्कि **संभावनाओं की एक शक्ति** हैं। यदि इनकी ऊर्जा को सही दिशा में लगाया जाए, तो यही युवा भारत को आत्मनिर्भर और वैश्विक शक्ति बना सकते हैं। लेकिन इसके लिए सिर्फ वादों की नहीं, **व्यवस्थित प्रयासों और गंभीर इच्छाशक्ति** की आवश्यकता है।

युवा बेरोजगारी केवल एक आंकड़ा नहीं है, यह उस पीढ़ी की आवाज़ है जो अवसर मांग रही है, पहचान चाह रही है, और एक सार्थक जीवन की तलाश में है। यदि यह आवाज़ अनसुनी रह गई, तो आने वाले समय में यह देश के लिए एक बहुत बड़ी सामाजिक चुनौती बन सकती है।

****

"हिंदी में पूरे देश को जोड़ने की ताकत है।" - नेहरू

गाँव और शहर की जीवनशैली में अंतर

चमन लाल
एम.टी.एस

भारत एक ऐसा देश है जहाँ गाँव और शहर दोनों का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। एक ओर गाँवों में प्रकृति की गोद में बसी सरल, शांत और सामूहिक जीवनशैली है, तो दूसरी ओर शहरों में भागदौड़, आधुनिकता और सुविधा से परिपूर्ण जीवन का चित्र है। इन दोनों जीवनशैलियों के बीच कई **मूलभूत अंतर** हैं, जो भारतीय समाज की विविधता को दर्शाते हैं।

गाँव की जीवनशैली

गाँव का जीवन शांति, सादगी और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण होता है। वहाँ के लोग अधिकतर कृषि, पशुपालन या हस्तशिल्प जैसे कार्यों में संलग्न रहते हैं। आपसी मेल-जोल, सामाजिक एकता और पारंपरिक रीति-रिवाज गाँव की विशेषताएं हैं।

गाँव की जीवनशैली की विशेषताएँ:

- प्रकृति के निकट जीवन
- समुदायिक भावना और पारिवारिक निकटता
- धीमी लेकिन संतुलित दिनचर्या
- ताज़ा और प्राकृतिक भोजन

तकनीकी साधनों की सीमित उपलब्धता

शहर की जीवनशैली

शहरों में जीवन तेज़, प्रतिस्पर्धी और सुविधा-प्रधान होता है। यहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और मनोरंजन के अधिक विकल्प उपलब्ध होते हैं। लेकिन इसी के साथ तनाव, अकेलापन और समय की कमी भी शहरवासियों की दिनचर्या का हिस्सा बन गया है।

शहर की जीवनशैली की विशेषताएँ:

- आधुनिक सुविधाएँ और टेक्नोलॉजी
- व्यस्त और समयबद्ध जीवन
- बेहतर शिक्षा और रोजगार के अवसर
- अधिक प्रदूषण और यातायात की समस्या

सामाजिक दूरी और व्यक्तिगत जीवन पर ज़ोर

दोनों जीवनशैलियों की चुनौतियाँ

- गाँव में **स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा और रोजगार की कमी** एक बड़ी समस्या है।

शहरों में **मानसिक तनाव, प्रदूषण और सामाजिक अलगाव** गंभीर मुद्दे हैं।

निष्कर्ष

गाँव और शहर दोनों की जीवनशैली की अपनी-अपनी विशेषताएं और सीमाएँ हैं। जहाँ गाँव सादगी, शांति और परंपरा का प्रतीक हैं, वहीं शहर आधुनिकता, प्रगति और अवसरों का केन्द्र हैं।

वास्तव में, **एक संतुलन** की आवश्यकता है – जिसमें गाँव की आत्मा और शहर की सुविधाएं मिलकर एक **सशक्त और संवेदनशील समाज** का निर्माण करें।

****

वर्ष 2024 में आयोजित विभिन्न प्रतियोगितायों के प्रतिभागियों के नाम

क्रम सं.	विजेता का नाम	पदनाम	कार्यालय का नाम	प्राप्त पुरस्कार
		हिंदी टिप्पणी प्रतियोगिता, दिनांक - 27 दिसम्बर 2023		
1	श्री राकेश कुमार	व.ले.प.अ.	प्रशासन	प्रथम
2	श्री विशाल वर्मन	स्टेनो- II	प्रशासन	द्वितीय
3	श्री शीतलदास महावर	व. लेखापरीक्षक	समन्वय	तृतीय
4	श्री अनुराग काशिव	लेखापरीक्षक	प्रशासन	सांत्वना
		हिंदी निबंध एवं पत्र लेखन प्रतियोगिता, दिनांक - 04 मार्च 2024		
1	सुश्री अर्पिता गुप्ता	स.ले.प.अ.	परेल	प्रथम
2	श्री राहुल शर्मा	स.ले.प.अ.	माटुंगा	द्वितीय
3	श्री परवीन	स.ले.प.अ.	बुकिंग	तृतीय
4	सुश्री आरुषि यादव	लेखापरीक्षक	प्रशासन	सांत्वना
5	श्री देवानंद कुमार सिंह	लेखापरीक्षक	सोलापुर मंडल	सांत्वना
		हिंदी निबंध प्रतियोगिता, दिनांक - 26 जून 2024		
1	श्री रामनिवास बिश्नोई	लेखापरीक्षक	परेल	प्रथम
2	सुश्री अर्पिता गुप्ता	स.ले.प.अ.	परेल	द्वितीय
3	श्री शीतलदास महावर	व. लेखापरीक्षक	समन्वय	तृतीय
4	श्री गजराज सिंह नेगी	लेखापरीक्षक	प्रशासन	सांत्वना

का कार्यालय
शि. ट.
समारोह
2024

हिन्दी दिवस
27 सितम्ब

हिंदी

दिवस

सत्यमेव जयते
का कार्यालय
छ. शि. ट.
हिन्दी
समारोह
27
2024

सत्यमेव जयते
महा निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
मध्य रेल मुंबई छ. शि. ट.
हिन्दी दिवस समारोह
27
म्बर 2024

2024

हिन्दी पत्रिका नवविहान-2024 का

विमोचन कार्यक्रम

आडिट

दिवस

2024

नव विहान

2025